द्वितीय अध्याय :

"विवेच्य कहानियों का सामान्य परिचय ।"

*****

२. द्वितीय अध्याय :- विवेच्य कहानियों का सामान्य परिचय :-

प्रस्तावना :-

प्रस्तुत अध्याय में प्रभाकर श्रोत्रिय द्वारा संपादित वर्ष, २००३ की 'नया ज्ञानोदय' पत्रिका में प्रकाशित कहानियों का परिचय दिया जा रहा हैं। इस वर्ष 'नया ज्ञानोदय' के कुल दस अंक प्रकाशित हो गए हैं। जिनका कथानक आसानी से समझने के लिए कहानियों का सामान्य परिचय प्राप्त करना अनिवार्य हैं। वर्ष, २००३ में 'नया ज्ञानोदय ' में प्रकाशित कहानियों की संख्या ३४ हैं। जिसमें २५ लेखक हैं, तो ०९ लेखिकाएँ हैं।

'नया ज्ञानोदय' ''ऐसी जनतांत्रिक पत्रिका बने जो साहित्य के विविध रुपों और विचार - सरणियों के साथ समय के बहुआयामी प्रश्नों, चिंताओं और समस्याओं को कई-कई कोणें से परखे और उन सहमतियों - असहमतियों को रेखांकित करे जो हमारे साहित्य - समय को प्रभावित करती हैं या उन पर दबाव डालती हैं और साहित्य के लिए उनमें हस्तक्षेप करना जरुरी होता हैं। हर अंक में हम अपने विशाल पाठक समुदाय के सामने किसी ऐसे मुद्दे पर देश के उच्च कोटि के विचार कों , सर्जकों और बुद्धिजीवियों के खुले विमर्श को लेकर प्रस्तुत होते हैं। '' १ यही 'नया ज्ञानोदय' के साहित्य की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता हैं। प्रकाशन क्रम की दृष्टि से विवेच्य कहानियों का सामान्य परिचय प्रस्तुत किया जा रहा है।

१) 'रिफ्यूजी कैम्प' - ज्ञान प्रकाश विवेक -

रिफ्यूजी कैम्प, ज्ञान प्रकाश विवेक द्वारा लिखित कहानी 'नया ज्ञानोदय' के फरवरी, २००३ के अंक में प्रकाशित हुई हैं। लेखक ने प्रस्तुत कहानी में शरणार्थियों के शोषण को चित्रित किया हैं।

प्रस्तुत कहानी का नायक स्वयं एक रिफ्यूजी है। उसके चार बेटे हैं। नायक का एक बेटा अविकसित है। नायक की पत्नी हैं। नायक रिफ्यूजी कैम्प निवास के दौरान डायरी

लिखना चाहता है। डायरी किस ढ़ंग से लिखनी चाहिए, लेकिन इसकी जानकारी उसे नहीं है।

इस कैम्प में जो लोग पढ़ाई-लिखाई की बात करते हैं, उनको सजा दी जाती हैं। कैम्प के लोगों चोरी छुपे नायक कुछ कागज और बही साथ लेकर जाता हैं। जिसका पता किसी को भी नही है। नायक डायरी लिखने के लिए प्रयास करता है। वह पहले पन्ने पर 'जंग' का उल्लेख करता है। नायक कहता है, - ''जंगों का कुछ इतिहास यही है कि दुनिया की एक चौथाई आबादी पनाह के लिए भटक रही है - जैसे कि मैं !..... जैसे कि इस कैम्प के लोग ! जैसे कि ..... जैसे कि.....२'' इस प्रकार नायक अपनी बात स्पष्ट कर देना चाहा है।

रिफ्यूजी कैम्प में अधिकारी लोग कैम्प के लोगों को सड़ा हुआ भोजन जानबूझकर देते हैं। अधिकारी लोग यह जानकारी लेना चाहते है कि, कितने लोग इनके विरोध में आवाज उठाते हैं। कैम्प में शरणार्थी लोगों की तम्बुओं की बस्ती है। इस बस्ती में नायक अपने परिवारवालों के साथ रहता है। शरणार्थियों की विपरित स्थिति से नायक उब गया है। इन शरणार्थियों में से दो लोगों ने कैम्प अधिकारी के विरोध में आवाज उठाई थी, इसी कारण उन दो शरणार्थियों को गोली मार दी गई। कैम्प में नारियाँ, वृद्ध लोगों पर भी अत्याचार होता हैं।

सभी लोग इस नरक यातना से तंग आकर ट्रक से भाग जाते हैं। ट्रक बहुत दूर जाता है। उसके बाद डेनियल नाम के रिफ्यूजी को पता चलता है कि, उसका चौथा बेटा पीछे छूट गया है। यह जानकर भी वह रिफ्यूजी उसे लाने के लिए पीछे भी नहीं जा सकता। बेटे से बिछुड़ने से डेनियल का हृदय द्रवित हो जाता है।

नायक को देश के प्रति अपने वतन के प्रति, अपनापन तथा प्यार है। शरणार्थी रिफ्यूजी कैम्प में अच्छी तरह से जीवन यापन नहीं कर सकते। इसी पक्ष का चित्रण करते हुए लेखक ने लिखा है, ''सब कुछ छीन जाने के बाद भी, एक शय बची रहती है - उम्मीद ! इसी उम्मीद के सहारे आदमी जीता है। उम्मीद खत्म तो जिंदगी खत्म !..... उम्मीद अब भी जिंदा है और

उसने मुझे .... हम सबको जिंदा रखा हुआ है कि वापिस अपने वतन जाएँगे। ३'' इस तरह लेखक ने अपने विचार प्रकट किए है।

कैम्प में लोग पानी प्राप्त करने के लिए कतार लगाते हैं। पानी की कतार में नायक का बेटा है। सिपाही पानी के लिए कतार में खडे हुए नायक के बेटे की कलाई पर ही लाठी का प्रहार करता है। जिससे उसकी कलाई की हड्ड़ी टूट जाती है। वह दर्द से त्रस्त होता है।

नायक कैम्प में बुजुर्ग तथा असहाय लोगों की सहायता करता हैं। सिपाही कैम्प में लोगों को रोटियाँ खाने के लिए देते हैं। कुछ लोगों को रोटियाँ नही मिल सकती। नायक का परिवार भी उन रिफ्यूजी कैम्प में है। नायक का बेटा भूख के कारण बहुत सारी रोटियाँ उठता है और भागता हैं। जिन लोगों को रोटियाँ नहीं मिली है, वह इन रोटियों पर टूट पडते हैं।

सब रिफ्यूजी बीमार पड जाते है। लेकिन अधिकारी लोग उन्हें अस्पताल नहीं ले जाते। इस रिफ्यूजी के कैम्प में सोफिया नाम की लड़की हैं। उसके साथ सार्जेंट ने दुर्व्यवहार किया है। इसीलिए कैम्प में लोग खामोश है। इन लोगों में से किसी ने सार्जेंट का खून कर दिया है। उसी दिन से नायक का अविकसित बडा बेटा 'अचुबा' गायब हो जाता है।

वह अविकसित बेटा 'अचुबा' सोफिया से प्यार करता है। लोगों का शक अचुबा पर है। लोगों का कहना है, सार्जेंट का खूनी यही 'अचुबा' है। कैम्प अधिकारी के गार्ड अचुबा को गिरफ्तार करते हैं। अचुबा को मौत की सजा दी जाती है। अंत में सोफिया नायक के परिवार में आ जाती है। सोफिया नायक से अजीब तरह से पेश आती है। वह नायक से अचुबा के कपडे माँगती है। सोफिया की इस बात से नायक कुछ नहीं कहता उन्हें यह सब बर्दाश्त नहीं होता। वे रो पडते हैं।

प्रस्तुत कहानी में लेखक ने शरणार्थियों की समस्या पर प्रकाश डाला है।

२) **'अरण्यरात्रि की महक':-** राकेश कुमार सिंह

'अरण्यरात्रि की महक' राकेश कुमार सिंह द्वारा लिखित कहानी 'नया ज्ञानोदय' के फरवरी, २००३ के अंक में प्रकाशित हुई है। लेखक ने प्रस्तुत कहानी में आदिवासियों के जन-जीवन में व्याप्त अंधविश्वास पर प्रकाश डाला हैं।

प्रस्तुत कहानी का प्रमुख पात्र कोयली मुंडा है। कोयली का मित्र फौजासिंह है। कोयली की पत्नी है। उसके बेटे का नाम डोनका है। कहानी के सभी पात्रों के नाम आदिवासी परिवेश से संबंधित हैं।

प्रस्तुत कहानी का नायक कोयली मुंड़ा, गरीब है। वह अंधविश्वासी है। वह अपने बेटे स्वास्थ्य के लिए मन्नते माँगता हैं। बेटे के इलाज के लिए उसके पास पैसे नहीं है। फौजासिंह उसे कहता है, अंधविश्वासी रहना अच्छी बात नहीं हैं वह कहता है, देवताओं की कोई जात नहीं होती। वह सभी के होते हैं। इस बात से कोयली कहता है, - ''फिर हमें गँजेड़ी बाबा की मठिया में घूसने क्यों नही देता पुजारी ? अपनी मठिया के सामने नाचने के लिए हमें भले बुला ले सादान लोग पर हम मठिया की सीढ़ी भी छू दें तो पाप लगता है। पिछले साल बीमार सोनार मुण्ड़ा नाचते-नाचते थक कर सीढ़ी पर बैठ गया था तो बात लाठी-भाले और तीर-धनुक तक पहुँच गयी थी। दीकू -बोंगा या सादान-पुजारी खाली हमारा नाच देखता खुश होता है सैब.... हमको असीसता थोडें है।''४ इस प्रकार लेखक ने आदिवासी जन जीवन की विशेषता पर प्रकाश डाला है।

फौजासिंह कहता है, पूजा को स्वीकार तथा अस्वीकार करने का अधिकार देवता को है। पुजारी को नहीं है। फौजासिंह व्यापारी है। गंजेड़ी बाबा के धाम पर जाने के लिए बहुत कठिन रास्ता है। फिर भी वह नायक को वहाँपर ले जाने का वादा करता है।

फौजासिंह के ढ़ाबे पर नायक कोयली फौजासिंह की सहायता करता है। दोनों की दोस्ती अधिक गहरी होने लगती हैं। मित्र नायक के बेटे को अपने ढ़ाबे में रख लेता है। क्योंकि

उसके बेटे को भोजन मिलेगा। पिता का अकेलापन भी दूर हो जाएगा। लेकिन पिता कोयली मुण्ड़ा किसी की रोटियों पर निर्भर नहीं रहता हैं। कोयली मुण्ड़ा स्वाभिमानी हैं। फौजासिंह जानता है कि, धाम पर कोई देवता नहीं है। आदिवासियों में व्याप्त अंधविश्वास ने उसे देवता बना दिया है।

जंगल में रहनेवाली लोग भोले होते हैं। धाम पर देवता गँजेड़ी बाबा ने कितने लोगों की मन्नतें पूरी की हैं। इसकी जानकारी किसी को नहीं हैं। लेकिन , लोग धाम पर सिक्के फेंकते हैं। इसीकारण फेंके गए सिक्कों से बहुत लोगों को फल-फूल नारियल बेचने का रोजगार प्राप्त हुआ हैं। वहाँ पर लोगों को गाँजे का प्रसाद दिया जा रहा हैं। धाम पर जाते समय कोई देख न लें, इसीलिए नायक और उसकी पत्नी कम्बल ओढ़कर जाते हैं।

फौजासिंह, नायक और उसकी पत्नी धाम पर पहुँच जाते हैं। नायक की पत्नी के हाथ से प्रसाद की पुड़िया गँजेड़ी बाबा के शीश पर गिरती है। नायक भयभीत होता है। फिर ढ़ाबे पर पहुँचने के बाद नायक पत्नी पर क्रोधित होता है। उसे पीटता है। उसका कहना है, पत्नी ने सतर्कता से भगवान को प्रसाद नहीं चढ़ाया है।

अंत में फौजासिंह नायक को विदा करता है। मित्र नायक से कहता है कि धाम पर कोई देवता नहीं है। वहाँ पर गाँजे का व्यापार है। लोगों को धर्म के नाम पर फँसाया जा रहा हैं। उस पक्ष का सुंदर चित्रण प्रस्तुत कहानी में दिखाई देता है।

फौजासिंह ढ़ाबे पर फिर एक बार अकेला रह जाता है। उसे नायक का अंधविश्वास उसकी यादें सताती हैं। सन् चौरासी के दंगों में मित्र के परिवार कत्ल हो गया है। मित्र अपने परिवार की यादों में खो जाता हैं।

प्रस्तुत कहानी में धर्म के नाम पर होनेवाले शोषण पर लेखक ने प्रकाश डाला है। अशिक्षा के कारण लोग अंधविश्वास की शिकार बन जाते हैं। इस पक्ष पर लेखक ने अपनी कलम चलायी है।

३) 'पापिन पाँखी :- - चंद्रिका ठाकुर 'देशदीप'

पापिन पाँखी, चंद्रिका ठाकुर 'देशदीप' द्वारा लिखित कहानी 'नया ज्ञानोदय' के फरवरी, २००३ के अंक में प्रकाशित हुई है। प्रस्तुत कहानी के माध्यम से लेखक ने अंधविश्वास का वर्णन किया है।

प्रस्तुत कहानी की कामा बुआ नायिका है। कामा बुआ के पति का निधन हो गया है। उसके बड़े भैया और भौजी है। कामा बुआ चिडिया की पिर्र ऽऽऽ..... पिर्र ऽऽऽऽ......आवाज सुनकर हररोज की तरह भयभीत होती है। बुआ का कहना है, चिड़िया की बोली बड़ी अपशकुन होती है। ठीक रात के बारह बजे यह तीन रात से बोल रही है। इसके बोलने से कोई अशुभ घटना घटती है। इसी बोली से उसके परिवारों में से दो सदस्यों की मौत हो चुकी हैं। ऐसा उसका विश्वास है।

कामा बुआ के भैया एक बार बीमार पड जाते हैं। लेकिन अंधविश्वास के कारण उन्हे अस्पताल नही ले जाया जाता। घर में हवा बतास की झाडफूक होती है। उन्हे बेहोशी में अस्पताल भर्ती किया जाता है। डॉक्टर बताते है कि, भैया की किड़नी फटने से उनकी मृत्यु हो चुकी है। इसी समय दलचिरैया अपशकुन बोली बोल रही है। अतएव कामा बुआ को विश्वास हो जाता है कि दलचिरैया की बोली के कारण ही उसके भैया की मृत्यु हो गयी है।

बुआ के परिवार में एक-एक करके सारे लोगों की मौत हो जाती है। आखिर में बुआ और भौजी परिवार में दोनों की जीवित रह जाती हैं। कुछ दिन बाद बुआ एक मृत पंछी को देखती है। पड़ोसी लड़के कहते हैं , बुआ का दुश्मन दलचिरैया है। लेकिन बुआ कहती है पंछी दुश्मन नहीं होतें।

फिर हररोज की तरह वही चिड़िया अपशकुन बोली बोलती है। बुआ इन सारी घटनाओं से जूझने पर वह थक जाती हैं। कुछ दिनों के बाद बुआ और भौजी गहरी नींद में होती

है। तब बुआ को चिड़िया की बोली सुनाई नहीं देती। चिड़िया पिरपिराकर चुप हो जाती है। अंत में बुआ और भौजी दोनों एक दूसरे के दु:ख दर्द को समझाने की कोशिश करती है।

प्रस्तुत कहानी के माध्यम से लेखक ने समाज में व्याप्त अंधविश्वास पर प्रकाश डाला है।

४) **'दलदल' - राजी सेठ,**

'दलदल,' राजी सेठ द्वारा लिखित कहानी 'नया ज्ञानोदय ' के मार्च-अप्रैल, २००३ के अंक में प्रकाशित हुई है। लेखिकाने प्रस्तुत कहानी के माध्यम से नायिका अपने ही 'दलदल' मे ऊबती - डुबती फंसती रहती है। इस पक्ष पर प्रकाश डाला है।

प्रस्तुत कहानी का नायक अमर है। नायिका का नाम आरती है। नायिका का बेटा अंशु है। वर्मा साहब आरती के बॉस हैं।

अमर पारिवारिक झगड़े से तंग आ गया है। जिसका जिक्र करते समय कहानीकार ने लिखा है, ''विष की बजाए गुड़ देकर मार रही है पत्नी।'' ५ इस प्रकार कहानीकार ने पति की दयनीय स्थिति का वर्णन किया है

आरती नौकरी करती है। उसके पति की स्थायी नौकरी नहीं है। आरती अपने बॉस वर्मा साहब से कहकर पति के लिए स्थायी नौकरी दिलवाना चाहती है। आरती वर्मा की पी.ए. है। वह अपना कर्तव्य समझकर आफिस के सभी काम अच्छी तरह से करती है। आरती अपने परिवार को कुटिल कहती है। वह आपने परिवार से अपनी नौकरी को अधिक महत्त्व देती है। उसके बॉस को मधुमेह की बीमारी है। वह अपने बॉस के स्वास्थ्य का भी अच्छा खयाल रखती है।

आरती का पति नौकरी करते समय दुश्मन द्वारा बिछाये बारुद के विस्फोट में जख्मी हुआ था। तब आरती एस. के. मजूमदार के यहाँ काम करती थी। एस.के. मजूमदार का रहन-

सहन अलग ही है। एस. के. मजूमदार अपनी बराबरीवालों के साथ ही हँसता है। आरती यह नौकरी छोड़ देती है। अब वह वर्मा साहब के आफिस में नौकरी करती है। उसे वर्मा साहब के साथ काम करना अच्छा लगता है। वह अपने बॉस को अपने पति की दुर्घटना की बात बताती है। पति सेकंड़ लेफ्टिनंट से कैप्टन बन गए है। लेकिन साल भी नही हुआ कि, पैट्रोलिंग के दौरान दुश्मन ने बिछाये बारुद के विस्फोट में उनके दाये पैर की पिंड़ली ही चली गई। अमर को अनेक जगहों पर नौकरी की आफर थी। पर उन्होंने रिटायरमेन्ट ही माँग ली।

अब अमर दूसरी जगह नौकरी करता है। वह दुकान में काम करता है। दुकानों में रबर और प्लास्टिक का साहित्य भरा रहता है। इस दुकान में दुर्व्यवहार होते देखकर उसे वहां काम करना उचित नहीं लगता। इसी दुकान में आग लग जाने से सारा साहित्य नष्ट होता है।

आरती अमर को उसका बायोडेटा वर्मा साहब को देने के लिए कहती है। अमर को स्वाभिमान की जिंदगी अच्छी लगती है। उसे आरती का वर्मा साहब के आफिस में काम करना अच्छा नहीं लगता। दोनों में परस्पर असामंजस्य निर्माण होता हैं। दोनों में तनाव की स्थिति निर्माण होती है। अमर ने अपना बायोडेटा वर्मा को नहीं दिया। एक दिन आरती सारा घर ढूंढ़ती है। उसे कमरे में अमर के बायोडेटा की तीन-चार प्रतियाँ मिल जाती है। अमर के इस व्यवहार से आरती निराश होती है। वह घर की कटू बातें घर में ही रखती है और आफिस जाती है। अंशु की परवरिश के लिए अंशु की दादी मां उसके घरपर है। आरती अमर को वर्मा साहब के आफिस में मुलाकात के लिए ठीक समय पर पहुँचने के लिए कहती है। उसके कहने पर वह उसके आफिस में जाने के लिए तैयार होता है। आफिस में वर्मा साहब, अमर, आरती तीनों मिलकर बातें करते हैं। एक दिन वर्मा साहब खुशखबर आरती को देते है। अमर की नौकरी पक्की हो गई है। उसको ब्रांच के मैनेजर पद पर नियुक्त किया गया है। यह बात सुनकर आरती खुश होती है। वह अमर को फोन पर यह खुशखबरी सुनाती है। वह कहती है।

तुम्हें नौकरी के लिए मेरठ जाने की कोई आवश्यकता नहीं है। यहीं पर तुम्हें नौकरी मिल गई है।

अमर यह खबर सुनकर खुश नहीं होता। वह चूप रहना पसंत करता है।

आरती घर पहुँचती है, तो अमर मेरठ जा चुका है। यह देखकर वह निराश होती है। प्रस्तुत कहानी में लेखिका ने बेकार अमर की मानसिक पीडा, यातना भोगनी पडती है, इसका पक्ष यथार्थ चित्रण किया है।

५) 'कई – कई शक्लोंवाले प्रेत':- – शिवकुमार यादव

''कई-कई शक्लोंवाले प्रेत'' , शिवकुमार यादव द्वारा लिखित कहानी 'नया ज्ञानोदय' के मार्च-अप्रैल, २००३ के अंक में प्रकाशित हुई है। प्रस्तुत कहानी में लेखक ने हिंदू- मुसलमान के बीच दंगे-फसाद का चित्रण किया है। प्रस्तुत कहानी में हत्याकांड़ का जिक्र हुआ है। वहाँ पर रहनेवाले लोगों को कैसी कठिनाइयों से जूझना पडता है। आदि पक्षों का चित्रण कहानी में चित्रित हुआ है।

कहानी में नायक छोटा बेटा है। बड़ा बेटा सूरज है। बडे बेटे की पत्नी का नाम अंतिका है। बेटे अपने पिताजी को 'बाबूजी' नाम से पुकारतें हैं।

नगर में कॉरपोरेशन का मुख्य गेट है। उस गेट के सामने किसी जानवर की लाश पड़ी है। गिद्ध कौवे ने उसकी देह को फाड़ डाला है। जिससे यहाँ पर दुर्गंधी फैली है। कॉरपोरेशन के किसी का भी ध्यान दुर्गंधी की ओर नहीं गया। शाम के समय में लोग अपने-अपने काम में व्यस्त है। सड़क के किनारे मांस बेचने की भी दुकानें भी है। वहाँपर कुछ 'टि स्टॉल' पर लोग चाय पी रहे हैं।

लेखक ने प्रस्तुत कहानी में महानगरीय जीवन का चित्रण सुंदर ढ़ंग से किया हैं। लेखक ने इसके संदर्भ में लिखा है, - ''एक तरफ पार्टियाँ फुफकारती हैं, तो दूसरी ओर

उनके ही गुण्ड़े ....! भय एवं आतंक के सन्नाटे में लोगों का जीना दूभर हो गया । मगर साँपों का रेंगना जारी है '' इस प्रकार लेखक ने आतंकित वातावरण का चित्रण किया है।

बाबूजी को नौकरी मिल जाती है। इस नौकरी में बेईमानी के रास्ते पर चलना पडता है। इसीलिए बाबूजी को यह नौकरी उचित नहीं लगती। वह नौकरी छोड़ देते है। उनको दूसरी नौकरी सेनरेले साईकिल कॉरपोरेशन इंण्डिया लि. में मिल जाती है।

बाबूजी की बस्ती में कम हिंदू लोग है, और मुसलमान लोग अधिक है। वहांपर आतंक का भय हमेशा छाया रहता है। उस आतंकसे बचने के लिए बाबूजी काली मंदिर हररोज जाया करते थे। मंदिरों में भी लड़ाई-झगड़े खून-खराबा होता हैं। इन सभी घटनाओं से बाबूजी तथा अन्य लोग भयभीत होते हैं। वहाँ पर हिंदू-मुसलमान परस्पर विरोधी हो जाते है। सभी लोग आतंक से त्रस्त हो जाते हैं। कुछ लोग ऐसे हैं, जो धर्म से परे सोचते हैं और परस्पर एक दूसरे के धर्म का आदर सम्मान करते हैं। इसमें हिंदू और मुसलमान लोग भी हैं। हिंदू और मुसलमान लोग जहाँपर रहते हैं, वह बस्ती हमेशा आतंक की छाया में रहती है। वह बस्ती छोड़कर वे किसी दूसरी बस्ती नही जा सकते।

छोटे बेटे का कहना है, मकान के पीछे पीर का खण्डहर है। उस जंगल में एक कुआँ है। छोटा बेटा जब छोटा था तब उसका बडा भाई सूरज बहन चाँदनी ये दोनों उसे डराते थे। इसीलिए छोटा बेटा डर जाता है। छोटे बेटे को 'कई-कई शक्लोंवाले प्रेत' नजर आ जाते है। खण्ड़हर से आवाजों आने लगती हैं। शक्लें गायब होती हैं। उससे वह बाबूजी को चिपककर सो जाता है। सुबह होनेपर बहन, बडा भाई स्कूल जाते हैं।

बाबूजी, मित्र कैलास बाबू के घर से देर से आते हैं। तब से वह उदास हो गए है। क्योंकि, उनको पता चला है, कि , कुछ लड़कों ने कैलास बाबू की बेटी सुनंदा के साथ बलात्कार किया है। उसे मारकर खण्डहर में फेंक दिया है। इसी घटना से बाबूजी और माँ दोनों की हिम्मत ही टूट जाती है। माँ काफी डरी हुई है। माँ सोचती है मुसलमान लोगों ने ही

सुनंदा के साथ यह दुर्व्यवहार किया होगा। इस बात से बाबूजी चिंतित हो जाते है। माँ का कहना है, हमारे घर में भी एक बेटी है। उन लोगों की दृष्टि भी हमारी बेटी पर होगी। माँ के इस विचार से बाबूजी, उसे डाँटते है। माँ और बाबूजी दोनों परेशान हो जाते है।

कुछ साल के बाद बाबूजी की बेटी चाँदनी का विवाह तय हो जाता है। माँ, बाबूजी खुश होते है। लेकिन चाँदनी के विवाह के लिए आर्थिक विप्न्नता का सामना करना पडता है। माँ बाबूजी को मकान बेचने के लिए कहती है। मकान तो फिर से बन जाएगा इससे इज्जत तो बची रहेगी। ऐसा माँ का कहना है। मकान बेचते समय बाबूजी को कई संकटों से जूझना पडता है। आखिर बाबूजी एक अच्छे व्यक्ति को अपना मकान बेचते हैं। वह व्यक्ति कम कीमत पर मकान खरीद लेता है। बाबूजी, माँ और छोटा बेटा मकान छोड़कर दूसरी जगह पर रहने जाते है। चाँदनी का विवाह हो जाता है। बाबूजी को सेवा-निवृत्ति के बाद जो पैसा मिलता है, उनपर जो ऋण है वह पेन्शन से अदा करते हैं।

बाबूजी चाहते है कि उनका बड़ा बेटा सूरज अफसर बने। उसका सब लोग अनुकरण करें। वह अपनी बस्ती का आदर्श बनें। नौकरी के लिए बडा बेटा पढ़ाई में अथक परिश्रम करने पर कभी रिटॅन में तो कभी ओरल में असफल होता है। वह आर्मी अफसर बनना चाहता है।

कुछ दिन बाद एक तार आ जाता है। तार में लिखा है चाँदनी की मौत हो गई है। घर के सभी लोग इस हादसे को बर्दाश्त नहीं कर सकते। छोटा बेटा कहता है, चाँदनी इस विवाह से खुश थी।

लेकिन बाद में पता चलता है कि, चाँदनी को उसके ससुरालवालों ने जहर देकर मार डाला है। इसमें पुलिस ससुरालवालों का साथ देती हैं। इस मामले में रिश्वत लेते समय पुलिस पकडी जाती है। इस प्रसंग से सूरज में बदले की भावना जाग उठती है। पुलिस एक मामले में छोटे बेटे को गिरफ्तार कर लेती है।

साप्रदायिक दंगे भड़कते है। लोग भी आपस में लड़ने लगते हैं। बडे बेटे सूरज को भी पुलिस पकडकर ले जाती है। बाबूजी इस घटना को बर्दाश्त नहीं कर पाते। उन्हे हार्टअटैक आता है। उन्हे अस्पताल लाया जाता है। छोटा बेटा बड़ा भाई जेल से छूटे इसीलिए प्रयास करता है। बाबूजी अस्पताल में, बडा भाई जेल में, इन दोनों की ओर भी छोटे बेटे को ध्यान देना पडता है। बाबूजी का शारीरिक स्वास्थ्य ठीक होनेपर वे घर लौटते हैं। बाबूजी को बडे बेटे से बडी उम्मीदें होती हैं। अब भी वह सूरज के स्वभाव को बदलना चाहते है।

बडा भाई जेल से छूट जाता है। वह अपने घर वापस लौटना है। वह प्रेम-विवाह करता है। छोटे बेटे को कम्प्यूटर की प्रायवेट कंपनी में सेल्समैन की नौकरी मिल जाती है। आखिर परिस्थिति बदल जाती है। लोगों की दृष्टि बदल जाती है। लेकिन बाबूजी की दृष्टि नही बदल पाती बाबूजी फिर वह भयानक सपनें देखते हैं। 'कई-कई शक्लोंवाले प्रेत', यह सपनों में आते हैं। प्रेतों के हाथों में हथियार होते हैं।

बाबूजी की तबीयत फिर बिगड़ जाती है। उनको दूसरी बार हार्टअटैक आ जाता है। बडा बेटा उनको अस्पताल ले जाता है। डॉक्टर कहते है, बाबूजी को लकवा मार गया है। उन्हे सूरज की याद आती है। इसीलिए वह बार-बार 'सूरज' का नाम लेते हैं। छोटा बेटा कहता है, बाबूजी को हार्ट अटैक जिस रात आया है, उसी रात बडे बेटे की मृत्यु हो गई है। सूरज और उसकी पत्नी अंतिका के विवाह को साल भी नहीं हुआ है। वह विधवा बन जाती है। बाबूजी अस्पताल में है । बाबूजी अस्पताल में है। छोटा बेटा उनके पास निराश होकर बैठा है। इसप्रकार यहाँपर कहानी समाप्त हो जाती है।

प्रस्तुत कहानी के माध्यम से लेखक ने सांप्रदायिक दंगों की ओर पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया है। सांप्रदायिक दंगों से त्रस्त उद्ध्वस्त परिवार की चित्रण यथार्थ के धरातल पर प्रस्तुत किया है।

६) 'प्रत्याशा' -'ए. असफल'

'प्रत्याशा,' ए. असफल द्वारा लिखित कहानी 'नया ज्ञानोदय' के मार्च-अप्रैल, २००३ के अंक में प्रकाशित हुई है। प्रस्तुत कहानी में लेखक ने पंछियों के जीवन पर आधारित प्रसंग का चित्रण किया है।

प्रस्तुत कहानी तीन मित्रों की हैं। मित्रों के नाम इस प्रकार है। पहले का नाम मोहकम है दूसरे का नाम शर्मा है , तो तीसरे का नाम सिंह है। वे एक ही कार्यालय में काम करते हैं। दोनों दरवाजों के ऊपर एक-एक रोशनदान हैं। दफ्तर के कमरे में दो दरवाजे हैं। रोशनदानों के शीशे, पानी और बिजली से टूट गये हैं। तीनों के टेबिलों के सामने की दीवार में दो आले हैं। उनमें कबूतर का एक जोडा रहता है। कमरे के ऊपर मध्यभाग में पंखा है। कबूतरों का जोडा कमरे में इस आले से उस आले तक आता-जाता है। वह पंखे से न टकरा जाए। इसीलिए तीनों मित्र डर जाते हैं। सिंह और शर्मा दोनों के सामने एक-एक आला हैं।

शर्मा और सिंह घर गृहस्थीवाले हैं। वह दफ्तर में आते ही कबूतरों के जोडो को देखकर, उनकी उछल-कूद देखकर उनकी थकान दूर होती हैं। मोहकम अविवाहित है। मोहकम कबूतरों के जोड़े पर कविता भी करता है। यह मित्र कबूतरों के जोडे देखने का बहाना बनाकर छूट्टी में भी दफ्तर आ जाते हैं। कबूतरों के जोडे अपने अण्ड़ों की सुरक्षा करते हैं। कबूतरी निश्चिंत होकर बाहर जाती हैं। तब कबूतर अण्डों की सुरक्षा करता हैं इससे स्पष्ट हो जाता है, इन कबूतरों में परस्पर अटूट विश्वास है। कबूतर परस्पर सहायता करते है। सिंह दफ्तर में अकाउण्टेण्ट है। सिहं की अलमारी काटकर उनके चेकबुक की किसी ने चोरी की है। वे थाने में एफ.आई.आर. दर्ज कराते हैं। पुलिस थाने ने दफ्तर को एक चौकीदार दिया है। यह चौकीदार दिन में भी निश्चिंत होकर सो जाता है। बरामदे में जो दरवाजा है, उसके पास डोंगा है। तीनों मित्र इस डोंगे से पानी पीते है। मोहकम पानी पी रहे थे कि, कबूतर उड़ान भरता है। ऊपर के रोशनदान में बाहर से मच्छरजाली लगती हैं। उसे कबूतर टकराता है। कबूतर डरकर

वापस जाता हैं, तो ऊपर के पंखे से टकराता है। टेबिल पर कबूतर का खून और उसके पंख बिखर जाते हैं।

कबूतरी यह दृश्य देखकर घबराकर बाहर चली जाती है। सिंह और शर्मा घबराते हैं। कबूतर नीचे गिर जाता है। थोडी देर में सिसक -सिसककर मर जाता है। इससे तीनों मित्र चौकीदार पर क्रोधित हो जाते हैं। कबूतर के मर जाने से कबूतरी की स्थिति दयनीय हो जाती है।

मोहकम कबूतरी की स्थिति देखकर विचलित हो जाता है। तिनों मित्र सोचते है। जीवन तो क्षणभंगूर होता है। कबूतर की मौत होनेपर कबूतरी की दयनीय स्थिति देखकर तीनों मित्र उदास हो जाते हैं। कमरे के हर वस्तुओं में कबूतर की यादें जुडी हुई है। कबूतर की यादों के कारण तीनों मित्रों ने कमरे के हर वस्तुओं की जगह की बदल डाली हैं। कबूतर की जगह पर कबूतरी शेष अण्डे रखती है। अब वह बच्चों को उडना सिखाती है। तथा शेष अण्डों की सुरक्षा करती है। कबूतरी जीवन में आनेवाले संघर्षो से जूझती है। इन सभी से तीनों को सीख मिलती हैं। अब शर्मा भी अलग हुए बेटों से नाराज नहीं होते। सिंह भी अपनी बेटी के 'प्रेम विवाह' को स्वीकृति देते है।

एक दिन चौकीदार रात के समय चैन से सो नहीं पाता। कबूतरी के बच्चों ने चौकीदार का ड्रेस खराब कर दिया हैं। चौकीदार क्रोधित हो जाता है। वह छोटे कबूतर के बच्चों को पिटता है। इससे उनके पंख झडने लगते है। उस कमरे से कबूतरी और बच्चे भयभीत होकर उड जाते हैं। चौकीदार क्रोध में आकर अण्डे जमीन पर पटकता हैं। तीनों मित्र कमरा खाली देखकर डर जाते हैं। वह मित्र जानकारी लेते है कि, चौकीदार की वजह से ही कबूतरों की यह स्थिति हो गई है। अब उन्हें चौकीदार की कोई आवश्यकता नहीं लगती है। मोहकम देखते है दफ्तर का कमरा ठण्डा हो गया है। कबूतरी सिकुड़ गई है। इस स्थिति पर वह विश्वास ही नहीं करते हैं। बाहर से कमरे में आ जाता है। वह आ जाने से कबूतरी बाहर उड जाती है। वह

छोटा कबूतर पिता की तरह अण्डों की सुरक्षा करता है। छोटा कबूतर माँ का स्थान लेता है। मोहकम कबूतरों की जीवन पद्धति देख लेते हैं।

अंत में मोहकम की प्रेमिका सोनालिका माता-पिता का घर छोड़कर उसकी राह देखती है। मोहकम भी जीवन के बारे में आनंदित होकर सोचता है। वे तीनों मित्र जीवन के महत्त्व को समझ चुके है।

प्रस्तुत कहानी प्रतीकात्मक है। पंछियों के जीवन साथ मानव जीवन की समस्याओं को जोडकर कहानीकार ने कहानी सुंदर ढ़ंग से प्रस्तुत की है।

७) 'पाँच दिन' - सुनीता जैन

'पाँच दिन' सुनीता जैन द्वारा लिखित कहानी 'नया ज्ञानोदय' के मई, २००३ के अंक में प्रकाशित हुई हैं। लेखिका ने प्रस्तुत कहानी के माध्यम से नारी की टूटी हुई मानसिक स्थिति का चित्रण किया है।

प्रस्तुत कहानी की नायिका सास है, जिसका नाम जानकी है। वह भारत में रहती है। उसके पति अपने परिवार को छोडकर फिलेडल्फिया में रहते है। नायिका को ललित और मनु दो बेटे है। एक बेटी है उसका नाम मीरा है। बेटा मनु अभी पढ रहा है। बेटी मीरा का विवाह हो गया है। ललित की पत्नी का नाम प्रज्ञा है। ललित के बच्चे नीरु और टिन्नी है। जानकी को अपने परिवार के प्रति प्यार अपनापन है। उसके पति आत्मनिर्भर है। नायिका आत्मनिर्भर नहीं है।

पिताजी बेटी का विवाह हो जानेपर वह अमेरिका में रहने लगते हैं। ललित ने अमेरिका में अपनी पसंद की लडकी से विवाह किया है। वह अमेरिका में रहता है। बहू का भारत में कोई रिश्तेदार नहीं है। अमेरिका में ही उसके सब रिश्तेदार हैं। ललित अपने माता-पिता से लिने भारत नहीं आता। माँ ही ललित से मिलने अमेरिका जाती है। तब बहू सास को कटू बातों से

अपमानित करती हैं। माँ अपमानित होकर, दु:खी होकर दिल्ली वापस आ जाती है। पिताजी को बेटे और बहू का व्यवहार उचित नहीं लगता।

ललित का परिवार न्यूयार्क में रहता है। माँ दो वर्ष के बाद दिल्ली से प्रज्ञा के घर न्यूयार्क आ जाती है। जानकी के पोते अब बड़े हो गए है। पोती नीरु को पाँच साल पूरे हो गए है। पोता टिन्नी साढे तील साल का हो गया है। जानकी सोचती है कि और कुछ दिन रह जाने से बच्चे उनके साथ रहकर खुश हो जाएँगे। बहू को जानकी का न्यूयार्क में आकर रहना अच्छा नहीं लगता। जानकी और ललित शाकाहारी है। बहू और बच्चे मांसाहारी है। बहू अपने पसंद का भोजन बनाती है। जानकी न्यूयार्क में रहती है तब बहू जान-बूझकर मांसाहार का भोजन बनाती है। ललित को यह उचित नहीं लगता। वह प्रज्ञा के बहकावे में आता है। ललित अपनी माँ की ओर बिलकूल ध्यान नहीं देता। ललित अपनी माँ को न्यूयार्क में और कुछ दिन रहने को भी नहीं कहता । प्रज्ञा को जानकी पहनती है, वही हीरे की चूड़िया चाहिए। उसे डर है सास वह हीरे की चूड़िया अपनी बेटी सविता को देगी। जानकी न्यूयार्क आते समय प्रज्ञा, बेटा बच्चे सबके लिए चीजें लाती है। जानकी प्रज्ञा अमेरिकी होने से उससे कोई उम्मीद नहीं रखती। बेटे की गृहस्थी ठीक चले सिर्फ यही उसकी इच्छा है। प्रज्ञा को जानकी बेटी जैसा प्यार करती है। फिर भी प्रज्ञा अपनी सास के साथ अच्छा व्यवहार नहीं करती। प्रज्ञा के परायेपन के भावसे, उसकी कटू बातें सुनकर जानकी टूट ही जाती है।

प्रस्तुत कहानी में नायिका की आंतरिक पीड़ा का वर्णन है। उसकी मनोदशा को दर्शाया गया है।

८) 'ढ़ेला' - आनंद बहादुर

'ढ़ेला', आनंद बहादुर द्वारा लिखित कहानी 'नया ज्ञानोदय' के मई, २००३ के अंक

मे प्रकाशित हुई है। प्रस्तुत कहानी में महानगरीय परिवेश का चित्रण कहानीकार ने सूक्ष्म दृष्टि से प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत कहानी में मध्यमवर्गीय परिवार का प्रतिनिधित्त्व करनेवाले पात्र है। प्रस्तुत कहानी में नायक मदनबाबू हैं । वह बीमारी के कारण बैंक में उपस्थित रहने के लिए असमर्थ है। जिस रास्ते से मदनबाबू कार्यालय के लिए आवागमन करतें हैं। उसी रास्ते पर यह 'ढ़ेला' पडा हुआ है। इसका चित्रण प्रस्तुत कहानी में आया है। एक दिन मदनबाबू काफी तनाव में होते हैं। वह कार्यालय जाते समय 'ढ़ेले' से टकराते हैं। फिर दुर्घटना होने से बच जाते हैं। तब मदनबाबू का मित्र उनको आयुर्वेदिक दवाइयाँ लेने की बात करता है।

इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में महानगरीय परिवेश का चित्रण किया है।

९) **'पारुल दी' — 'दिनेश पाठक'**

'पारुल दी ' दिनेश पाठक द्वारा लिखित कहानी 'नया ज्ञानोदय' के मई, २००३ के अंक मे प्रकाशित हुई है। लेखक ने प्रस्तुत कहानी के माध्यम से एक अनपढ़ नारी की मानसिक पीड़ा का दर्दनाक चित्रण प्रस्तुत किया है।

कहानी की नायिका 'पारुल दी' है। वह एक सामान्य परिवार की है जो अपने गाँव में रहती है। उसका परिवार संयुक्त है। उसके परिवार में वह सबसे लाड़ली है। परिवार के लोग लाड़-प्यार से उसे 'पारुली ' कहते है। उसका एक चचेरा भाई है, जिसका नाम 'आशी' है। वह लाड़-प्यार से उसे 'पारुल दी ' कहता है।

पारुल बहुत ही सुंदर है। पारुल परिवार में अपने भाई-बहनों से सबसे बड़ी है। परिवार में कोई बच्चा शरारत करता है, तो मार 'पारुल दी' को खानी पडती है। 'पारुल दी' सहनशील व्यक्तित्व की है। वह मितभाषी है। वह तेज दिमाग की है। परिस्थितिवश वह

अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर पाती। वह अपने माता-पिता को खेती के कामों में सहायता करती है।

पारुल का विवाह अबोध अवस्था में तय हुआ था । उसका चचेरा भाई इस विवाह का विरोध करता है। पारुल की माँ , बहन का विवाह भी छोटी उम्र में ही हुआ है। उसके परिवार के सब लोगों के विचार परंपरागत है। चचेरा भाई पारुल के विवाह को लेकर परिवार में बहस नही करता । जो पारुल भूखी-प्यासी रहना पसंद करती। लेकिन रोटी-प्यासी रहना पसंद करती है। लेकिन रोटी-पानी नहीं माँगती। वह अपने विवाह का विरोध कैसे कर सकती है ?

पारुल के पति का गाँव छह मील की दूरी पर है। उसका पति घुटनों तक धोती पहनता है। वह यजमान कार्य में अपने पिताजी की सहायता करता है। यही बात चचेरे भाई को अच्छी नहीं लगती। चिंतामणि के साथ पारुल का विवाह हो जाता है। पारुल के मायके में चचेरे भाई को पारुल की कमी महसूस होती है। जब वह मायके आ जाती है उसके बाद वह अपने ससुराल वापस नही जाती है। ससुराल के लोग उसके साथ अच्छा व्यवहार नहीं करते।

पारुल की सास उसे परेशान करती है। लेकिन, वह संवेदनशील नारी है। वह सास को कुछ नहीं कहती। पारुल की दयनीय स्थिति देखकर आशी दु:खी हो जाता है। पारुल को सही समय पर भोजन नहीं दिया जाता। पारुल कृशकाय बन गई है। उसका पति चिंतामणी अपनी पत्नी पारुल का पक्ष नहीं लेता। बल्कि , अपने माँ के इशारों पर चलता है।

एक दिन पारुल का पति दूसरे गांव से पूजा निपटाकर वापस आ जाता है। वह दुकान से बिस्कुट के पैकेट खरीद लाता है। वह सोचता है पारुल खेत में काम करते समय उसे भूख लगने पर बिस्कूट खा लेगी। लेकिन पारुल बिस्कुट के पैकेट आँचल में छूपाती है। लेकिन घर पहुँचते ही सास पारुल के साथ से डलिया लेती है। सास पारुल से घर में आए मेहमानों के लिए चाय बनाने के लिए कहती हैं। डलिया खाली करते समय सास को बिस्कुट के पैकेट मिल जाते हैं। यह पॅकेट देख कर सास क्रोधित होती है। सास पारुल पर आरोप लगाती है। उसे

'दुराचारणी' 'वेश्या' कहकर अपमानित करती है। पारुल पर अत्याचार होते देखकर उसका पति कुछ भी नहीं कहता। फिर सास पारुल को अपने घर से निकाल देती है। उस दिन पारुल जानवरों के गोठ में रहती है।

दूसरे दिन पारुल के पिता पारुल के घर आ जाते हैं, ससुराल वालों के व्यवहार से पारुल के पिता दुखी हो जाते है। पिता उसकी सफाई देते हैं। लेकिन पारुल की सास पारुल के पिता का भी अपमान करती है। पिता अपनी बेटी को लेकर अपने घर आ जाते हैं। पारुल दु:खी हो जाती है। उसके कारण घर सारे के लोग भी दु:खी होते हैं। पारुल अंदर से टूट ही जाती है। पारुल के ताऊ उसे जीने के लिए हौसला बढ़ा देते हैं। चचेरा भाई भी उसे समझाता है कि, तुमने अन्याय का विरोध क्यों नहीं किया। फिर वह कहता है उससे दु:खी न होकर फिर से हँसों, बोलो तो सारा घर खुश हो जाएगा।

तीन महीने के बाद पारुल सिर्फ चचेरे भाई से ही बातें करती है। वह चचेरे भाई से अपनी पढ़ाई-लिखाई की बातें करती है। वह दिनभर काम में ही लगी रहती है। उसे रात में ही समय मिलता है। उसी समय वह पढ़ना-लिखना सीख जाती है। वह होशियार होने से पढ़ाई में सफल होती है। उधर पारुल के पति का दूसरा विवाह हो जाता है। इस विवाह की खबर सुनते ही पारुल का परिवार दु:खी हो जाता है। वर चचेरे भाई को ससुराल वालों का अत्याचार बताती है। उसके पति ने ही उसे बिस्कुट के पॅकेट दिए। वह पति की इज्जत बचाने के लिए सच बातें लोगों से नहीं बताती।

चचेरा भाई पारुल को किताबें लाकर देता है। वह पढ़ना- लिखना सीखती है। पारुल अपने वृद्ध माता-पिता की सेवा करती है। उन्हें 'रामायण' सुनाती है। तब माता-पिता का हृदय द्रवित हो जाता है। उसे पति की खबरें मिलती रहती है। ससुराल वालों को बच्चों को सँभालने के लिए एक धाय की आवश्यकता है। इसीलिए ससुराल के लोग पारुल को वापस ससुराल लाना चाहते है। लेकिन वह अपने ससुराल वापस जाने के लिए इनकार करती है।

पारुल की दयनीय स्थिति का जिक्र करते हुए लेखक ने लिखा है कि, - ''लड़की तो होती ही जानवर है, आशी ! जब चाहा, जहाँ चाहा उठाकर बाँध दिया.....७'' इस प्रकार पारुल की स्थिति धोबी के कुत्ते के समान होती है। 'ना घर का ना घाट का'।

पारुल पुनश्च अपने ससुराल जाने के लिए बिलकूल तैयार नहीं है। पारुल ससुराल के लोगों से जूझते हुए, स्वयं निड़र हो जाती हैं। वह आत्मनिर्भर बन जाती है। ऐसे उसके स्वभाव से चचेरा भाई खुश होता है। आशी पारुल का हौसला बढ़ा देता है, वह उसका साथ देता रहता है।

प्रस्तुत कहानी में लेखक ने बालिका विवाह को दर्शाया है। परित्यक्ता की समस्या को प्रस्तुत किया है। कहानी में संवेदनशील नारी को चित्रित किया है। बहू को दी जानेवाली मानसिक यातना का चित्रण बडी सशक्तता के साथ हुआ है।

१०) 'द्वंद्व समास : उर्फ कथा एक तिलिस्म की' -- राजेंद्र लहरिया

'द्वंद्व समास : उर्फ कथा एक तिलिस्म की, ' राजेंद्र लहरिया द्वारा लिखित कहानी 'नया ज्ञानोदय ' के जून, २००३ के अंक मे प्रकाशित हुई है। प्रस्तुत कहानी में अंधविश्वास पर प्रकाश डाला है।

प्रस्तुत कहानी का नायक रोशन है। रोशन की पत्नी और दो बच्चे है। नायकका जन्म एक ग्रामीण परिवार में हुआ है। उसके गाँव में सभी जातियों के लोग रहते हैं। उसके गाँव में जमींदार रामसजीवन महाते की हवेली हैं। उनकी हवेली बडी ही शानदार है। जमींदार ब्राह्मण है। जमींदार की हवेली में विभिन्न जातियों के नौकर है। रोशन के पिता का नाम रघुवरदयाल है। वे ईमानदार है। मुनीम के होनेपर भी जमींदार , रोशन के पिता को हिसाब-किताब के लिए रखता है। रोशन की माँ अनपढ़ है। लेकिन वह काफी समझदार है। जमींदार ने जान-बुझकर एक गरीब व्यक्ति के नाम पर नौ हजार रुपये उधार लिखे थे। जब असलियत का पता रघुवर

दयाल को लगता है, वह जमींदार को बताता है कि, आपने उस व्यक्ति के नामपर नौ हजार रुपये गलती से लिखे होंगे। तब जमींदार रघुवरदयाल से मारपीट करता है। उसे वह बात अपमानजनक लगती है।

रोशन की उम्र छ: साल की है। वह पढ़ाई मैं तेज है। उसके पढ़ने - लिखने का तरीका भी बिल्कुल साफ-सुथरा है। उसके अक्षर भी बडे सुंदर हैं। वह बडा हो गया है। उसे खेती में काम करना अच्छा लगता है। अब उसकी उम्र सोलह साल की हो गई है। वह दसवी कक्षा में पढ़ने लगा है। उसका विवाह हो जाता है। विवाह से वह खुश होता है। लेकिन कुछ दिन में वह अपने पत्नी के विपरित स्वभाव से परिचित हो जाता है। रोशन अपनी पत्नी को अच्छी रहन-सहन के प्रति सजग करता है। लेकिन पत्नी उसके विपरित व्यवहार करती है। जिससे रोशन तंग आता है। रोशन नास्तिक है, तो उसकी पत्नी आस्तिक है। उसे धर्म पूजा, आराधना में समय व्यतीत करना अच्छा लगता है।

कुछ दिन बाद परिवेश बदल जाता है। रोशन ने बी.ए. पास किया है। उसकी पत्नी को दो बच्चे हैं रोशन के माता-पिता की मृत्यु हो जाती हैं। दोपहर के समय रोशन की पत्नी को भूत-प्रेत-पिशाच दिखाई देते हैं। वह डरकर जोर से चिल्लाती है। लेकिन रोशन का भूत-प्रेत पर विश्वास नहीं है। पत्नी की इन हरकतों से वह बहुत ही परेशान हो जाता हैं।

रोशन नास्तिकवादी दृष्टिकोण से जीवन यापन करता है। वह रुढ़ि, परंपराओं का विरोध करता है पूजा - अर्चा तथा विविध त्यौहार को महत्त्व नहीं देता वह दीवाली और होली जैसे बड़े त्यौहार पर रोटी - सब्जी बनाकर खाता हैं।

कई साल बीत जाते हैं। रोशन की पत्नी का अंधविश्वास पूर्ववत रहता है। वह भगवान की पूजा रोशन से चोरी छूपे करती है। उसे वही पिशाच् दिखाई देते हैं। वह फिर भयभीत होती है।

प्रस्तुत कहानी में लेखक ने अंधविश्वास की समस्या को सशक्तता के साथ चित्रित किया है। प्रस्तुत कहानी भी पूर्वदीप्ति शैली का प्रयोग सुंदर ढंगसे हुआ है। वरिष्ठ वर्ण द्वारा दलित जातियों के शोषण की समस्या, बेगार की समस्या, ईमानदारी की समस्या, अनपढ़ लोगों की समस्या का जिक्र प्रस्तुत कहानी में आया है।

११) **'अंतर्कथा' - पुन्नी सिंह**

'अंतर्कथा', पुन्नी सिंह द्वारा लिखित कहानी 'नया ज्ञानोदय' के जून, २००३ के अंक में प्रकाशित हुई है। लेखक ने प्रस्तुत कहानी में 'बाल-सुधाार गृह' के नाम पर किए जानेवाले दुर्व्यवहार का चित्रण किया है।

प्रस्तुत कहानी के नायक वार्डन चाचा है जिनका नाम हैं, वसीर खाँ। दूसरा वार्डन नगीना सिंह है। ये दोनों बहुत अच्छे मित्र हैं। जेल में प्रमोद और महावीर दोनों किशोर कैदी हैं। जेल के अधीक्षक बी.के. भट्ट है। जेल के आश्रम में मौनी बाबा है। अधीक्षक का मित्र दारोगा है।

प्रमोद अपराधी लड़का है। उसने अपने चाचा का खून किया है। जिसकी उम्र १४ साल की है। प्रमोद को जेल में लाया जाता है। जेल का नाम 'बाल सुधारगृह' है। प्रमोद का जेल में महावीर से झगडा होता है। महावीर कुछ वर्षों से जेल में रहता हैं। महावीर अन्य किशोर कैदियों के साथ गुंडा-गर्दी करता है। महावीर ने प्रमोद को उलटी-सीधी बातें कह दी हैं। प्रमोदने क्रोध में आकर महावीर को मार-पीट की है। फिर दोनों एक दूसरे को मार-पीट करते हैं। इस दौरान वहाँपर अधीक्षक बी.के. भट्ट भी आ जाते हैं। अधीक्षक वार्डन वसीर खाँ और नगीना सिंह को प्रमोद पर निगरानी रखने की जिम्मेदारी सौंप देते हैं।

प्रमोद फिर से मार-पीट नहीं करता। वह जेल में किसी के साथ बातें भी नहीं करता। जब प्रमोद की माँ उसे मिलने जेल में आ जाती है। तब प्रमोद उससे मिलने के लिए इनकार कर

देता है । जेल में सभी लोगों को प्रमोद का अपनी माँ के प्रति यह व्यवहार देखकर लोग आश्चर्यचकित होते है । जेल में छः नंबर के कमरे की जगह डरावनी है । उस जगह पर जहरीलें साँप हैं । उन जहरीले साँपों ने इससे पहले दो लडकों को काटा हैं । उन लड़कों की मौत हो गई हैं । साँपों ने दो वार्डनों को कांटा है । उसी जगह पर प्रमोद को बैठे देखते हुए वसीर खाँ घबरा जाते हैं । प्रमोद अच्छा लड़का है । महावीर अच्छा लड़का नहीं है । प्रमोद अपनी तुलना महावीर के साथ करता है । यह बात वसीर खाँ को उचित नही लगती । प्रमोद के चाचा उनकी जायदाद पर अधिकार ग्रहण करते हैं । चाचा का रहन-सहन अच्छा नहीं है । प्रमोद की माँ को वे बार- बार परेशान करते हैं । इससे तंग आकर प्रमोद ने अपने चाचा का कत्ल किया है ।

वसीर खाँ, नगीना सिंह से उम्र में बडे हैं । नगीना सिंह, वसीर खाँ को 'चाचा ' कहते हैं। नगीना सिंह वसीर खाँ को 'चाचा' कहते हैं । नगीना सिंह अपने ''चाचा'' वसीर खाँ का सम्मान करते हैं । वसीर खाँ दिल के साफ, सच्चे और ईमानदार हैं । नगीना सिंह का कहना है जीवन में वसीर खाँ जैसे समझदार स्वभाव के मनुष्य कम ही मिलते है । वसीर खाँ भी नगीना सिंह को ईमानदार कहते हैं । इन दोनों ने एक दूसरे के जीवन को गहराइयों से देखा हैं । यह दोनों एक दूसरे पर विश्वास करते हैं ।

प्रमोद हमेशा अकेला रहता है । अधीक्षक का कहना है, प्रमोद अपराधी प्रवृत्ति का ही है। दो वार्डन कहते हैं प्रमोद अपने चाचा के बुरे व्यवहार से तंग आकर वह अपराधी बन गया है । प्रमोद सुधर जाएगा । इसीलिए दोनों वार्डन प्रयास करते हैं । कुछ दिनों के बाद प्रमोद के स्वभाव में परिवर्तन आ जाता हैं । वह सभी के साथ मिल जुलकर काम करता है । वहाँ स्कूल में जाता हैं । हर काम में अभिरुचि लेता है । वह ट्रैक्टर चलाना भी सीखता है । वसीर खाँ अपने परिवार में अकेले हैं । वह प्रमोद की माँ को विश्वास के साथ कहते है , प्रमोद जेल से छूट

जाएगा परेशान होने की कोई आवश्यकता नही है । उनकी विश्वास भरी बातों से प्रमोद की माँ खुश होती है।

जेल में लडके सुधर जाएँ इसीलिए अधीक्षक स्कूल चलाते हैं। जेल में सोमवार के दिन मौनी बाबा का प्रवचन होता हैं। दोनों वार्डन प्रमोद को सहयोग देते हैं। अधीक्षक प्रमोद का विरोधी है। अधीक्षक जेल में लड़कों का शोषण करते है। इसलिए अधीक्षक को नौकरी से निकाल दिया गया था। लेकीन वार्डन कहते है कि, मौनी बाबा के आशीर्वाद से उन्हें फिर से नौकरी मिल गई है। अधीक्षक के गुरु मौनी बाबा है।

कृषि फार्म में काम करनेवाले देवीलाल का खून हुआ है। लेकिन कैदियों में यह बात जान-बूझकर फैला दी गई है कि, साँपने काटने से देवीलाल की मृत्यु हो गई है। सुधारगृह के लड़के मौनी बाबा के आश्रम में काम करने के लिए तैयार नहीं होते। लड़के कहते है कि, मौनी बाबा व्यभिचारी हैं। इन सब बातों से अधीक्षक भयभीत होकर मौनी बाबा के पास जाते हैं। मौनी बाबा का कहना है, यहाँपर परिस्थिति ठीक नहीं हैं। शांत रहना ही उचित है। प्रमोद जेल के अन्य लड़कों के कारनामों की जानकारी देने के लिए अधीक्षक के पास जाता हैं। प्रमोद अधीक्षक से कहता है जेल के लडके नशा करते हैं। अधीक्षक क्रोधित होकर प्रमोद को ही चाँटा देते हैं। अधीक्षक प्रमोद की बातों में विश्वास नही रखते। प्रमोद और महावीर दोनों जेल से भाग गए हैं। अधीक्षक प्रमोद और महावीर को अपराधी ही कहते हैं। वसीर खाँ ने प्रमोद की माँ से प्रमोद को जेल से मुक्त करने का वचन दिया हैं। यह वचन वह पूरा नहीं कर सकते। इसीलिए वसीर खाँ प्रमोद की माँ से माफी माँगते हैं। प्रमोद के भाग जाने के कारण उसकी माँ जेल के अधीक्षक पर क्रोधित हो जाती है।

प्रस्तुत कहानी में लेखक ने जेल में व्याप्त व्यसनाधीनता पर प्रकाश डाला है।

१२) **'मुझे उसे जिंदा रखना हैं' -मुशर्रफ आलम जौकी**

'मुझे उसे जिंदा रखना है' मुशर्रफ आलम जौकी द्वारा लिखित कहानी 'नया ज्ञानोदय' के जून, २००३ में प्रकाशित हुई । प्रस्तुत कहानी के माध्यम से नायक की मानसिकता का चित्रण किया है । प्रस्तुत कहानी तीन परिच्छेदों में विभक्त हैं। प्रस्तुत कहानी आत्मकथात्मक शैली में लिखी गई है।

नायक अपने जीवन की कहानी प्रतिपादित करता है। उसका जन्म होने पर वह नहीं रोया था, इसलिए उसके घर के लोग भयभीत हो गए थे। दाई ने उसे अनेक प्रयासों के बाद मरने से बचाया था। नायक जन्मना कृशकाय है।

नायक के माँ-बाप उसे स्कूल में भर्ती कर देते हैं। स्कूल के अन्य बच्चे नायक को तंग कर देते है, जिससे नायक उब जाता है। नायक कृशकाय और अपने मां-बाप की अकेली संतान होने के कारण उसके अभिभावक उसे दिलो जान से चाहते हैं।

नायक बड़ा हो जाता हैं। उसके घर पितृप्रेम से वंचित लड़की आती-जाती है। नायक उसपर प्रेम करता है। वह उसे नया घाघरा खरीदता है। घाघरेवाली लड़की के साथ नायक विवाह करता है।

नायक के पिताजी की मृत्यु हो जाती है। नायक को एक जगह मजदूर की नौकरी मिल जाती है। वहाँ पर अथक परिश्रम करना पडता है। नायक वह मजदूरी का काम करने में असमर्थ है।

इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में नायक की मानसिकता के विविध पहलूओं पर प्रकाश डाला है।

१३) 'औरत' - अशोक प्रियदर्शी

'औरत ' अशोक प्रियदर्शी द्वारा लिखित कहानी 'नया ज्ञानोदय' के जून, २००३ के अंक में प्रकाशित हुई है। लेखक ने प्रस्तुत कहानी के माध्यम से नारी की दयनीय स्थिति का चित्रण किया है।

प्रस्तुत कहानी की नायिका मिसेस सिमरन कौर अहलूवालिया है। उसकी बडी बेटी का नाम बिट्टी है। उसकी छोटी बेटी भी है। नायक प्रोफेसर है। कॉन्फरेंस की निमंत्रक मिस सुदर्शना चोपडा है। नायिका सिमरन की सहेली मिसेज मनजीत चड्ढ़ा है।

प्रस्तुत कहानी की नायिका अपनी बडी बेटी बिट्टी के साथ चण्डीगढ़ में रहती है। उसकी छोटी बेटी लॉस ऐंजेलिस में रहती है। छोटी बेटी कम्प्यूटर में पढ़ाई कर रही है। नायिका सिमरन शिक्षा विभाग में सिनियर एक्जिक्यूटिव पर पद कार्यरत है। नायिका की बेटी बिट्टी दिल्ली विश्वविद्यालय से बॉटनी में एम.एस्सी. उत्तीर्ण हो गई है। फिर पर्यावरण विषय में पोस्ट ग्रेजुएट हुई है। दिल्ली विश्वविद्यालय में बडी बेटी के कामकाज के कारण दोनों दिल्ली आ जाती हैं।

मिसेज सिमरन और उसकी बडी बेटी दिल्ली पहुँच जाती हैं। दिल्ली शहर के दफ्तर में कॉन्फरेंस हॉल है। वहाँ पर दोनों जाती हैं। उसी दफ्तर में अग्रवाल साहब वरिष्ठ है। नायिका की उम्र इक्कावन वर्ष की है। उसकी बडी बेटी पच्चीस वर्ष की है। मिसेज सिमरन अपनी बडी बेटी का परिचय दफ्तर के लोगों से करवाती है। मिसेज सिमरन बडी बेटी को चण्डीगढ़ अकेली लौट जाने के लिए कहती है। फिर मिसेज सिमरन बेटी बेटी के काम के कारण दिल्ली में रुक जाती है। मिसेज सिमरन अग्रवाल साहब को गेस्ट हाऊस में रहने के लिए जगह देने के लिए कहती है। नायक प्रोफेसर उसी गेस्ट हाउस में ठहरे है। अग्रवाल साहब निसेज सिमरन को गेस्ट हाउस में दूसरा कमरा देते हैं।

अगरवाल साहब दफ्तर के लोगों को मिसेज सिमरन का परिचय करवाते है, मिसेज सिमरन के पति अहलूवालिया साहब दिल्ली के उसी दफ्तर में ऑफिसर थे। अब उनकी मौत हुई है। लेखक मिसेज सिमरन का चरित्र चित्रण करते हुए लिखता है ''पचास के पास की उम्र में भी उनके शरीर का कस-बल रोमांचित करनेवाला था। लम्बी, सुगठित सुपुष्ट देहयष्टि। गोरा चेहरा। बड़ी गीली-गीली सी आँखे। पंजाब की सिक्खनी का दर्प। ''८ इस प्रकार नायिका की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकार डाला है। नायक और नायिका दिल्ली घूमने जाते हैं। नायक के लिए दिल्ली शहर अजनबी हैं। नायिका दिल्ली में अपनी सहेली मिसेज चड्ढ़ा को मिलने के लिए उसके घर जाना चाहती है। लेकिन नायक सहेली के घर जाने से कतराते हैं। फिर दोनों सहेली के घर जाते हैं।

मिसेज सिमरन को बडी बेटी की कोई चिंता नहीं है। बल्कि उसे अपनी छोटी बेटी की चिंता है। छोटी बेटी अमेरिकी लड़के से प्रेम विवाह करना चाहती है। मिसेज सिमरन इसका विरोध करती है। नायक और नायिका का प्रोग्रॅम दूसरे दिन शाम के समय तय हुआ है। नायक को सुदर्शना चोपडा अपने साथ बाहर रेस्तराँ में चलने के लिए कहती है। मिसेज सिमरन यह बात सुनकर नाराज होती है। फिर अकेली गेस्ट हाऊस जाती है। नायक सुदर्शन चोपडा के साथ बाहर रेस्तराँ में जाता है। मिसेज सिमरन नायक का इंतजार करती है। मिसेज सिमरन अपने कमरे में नाराज होकर लेटी रहती है। नायक देर रात वापस गेस्ट हाउस लौटता है। मिसेज सिमरन ने अब तक भोजन नही किया वे दोनों बाहर जाकर खाना खा लेते हैं। मिसेज सिमरन अपनी बेटियों के विवाह के बारे में चिंतित है। नायक उसे विश्वास दिलाता है कि, सब कुछ ठीक हो जाएगा।

प्रस्तुत कहानी में विधवा नारी को अपने बेटियों के विवाह तथा उनकी नौकरियों की समस्या कितनी प्रभावित करती है। इस पक्ष का सजीव चित्रण प्रस्तुत कहानी में लेखक ने किया है।

१४) 'तुम मेरी राखो लाज हरी', - मालती जोशी

'तुम मेरी राखो लाज हरी,' मालती जोशी द्वारा लिखित कहानी 'नया ज्ञानोदय' के जुलाई ,२००३ के अंक में प्रकाशित हुई है। प्रस्तुत कहानी में विधवा बहू को अपने ही ससुर की वासना का शिकार बनना पडता है। इस पक्ष का चित्रण है। प्रस्तुत कहानी की नायिका संध्या है, जो विधवा है। उसके पति मनीष की मृत्यु हो गई है। संध्या अपने सास-ससुर के साथ रहती है।

संध्या सुंदर है। वह विधवा है। इसीलिए संध्या की जिम्मेदारी सास नहीं लेना चाहती। संध्या के मायके के लोगों का कहना है, संध्या ससुराल में ही रहे। ससुराल ही संध्या का अपना घर है। संध्या कुछ दिन मायके रहती है। मायके में भाई-भाभी का व्यवहार ठीक न होने के कारण वह वापस ससुराल जाती है। संध्या की माँ को डर है कि, संध्या की समस्त जायदाद पर उसके भाई-भाभी अधिकार जताये। संध्या की माँ उसके दूसरे विवाह को लेकर सोचती है। ससुर का दृष्टिकोण संध्या के प्रति अच्छा नहीं है। संध्या की ननद सविता को भी अपने पिताजी के व्यवहार का पता है। इसीलिए संध्या का ससुराल में रहना, अच्छा नहीं है। संध्या की स्थिति 'ना घर का ना घाट का ' ऐसी होती है। संध्या ससुराल में रहन से उसकी सास चिंतित है।

अपने बेटे की मृत्यु का दु:ख इसीलिए सास भूल जाती है कि, इतनी सुंदर जवान बहू घर में है। इसीलिए ऐसी सुशील बहू को घर में रखना उसे अच्छा नही लगता। ससुर, संध्या को ड्रायविंग सिखाने की बात करते हैं। संध्या की अधुरी पढाई पूरी करने के लिए उसे कॉलेज भेज दिया जाता है। उसे एम्. ए. अंग्रेजी में प्रवेश मिल जाता है। जब संध्या का विवाह हो जानेपर , वह अपने घर आयी थी तब वह कुटूंब प्रेमी, पतिपरायणा, घर में सब सदस्यों की ओर ध्यान देती थी। लेकिन अब वह विधवा हो गई है। अपने प्रति होनेवाला अन्याय देखकर उसका जीवन के प्रति दृष्टिकोण बदला है। उसे अपने घर का कोई भी काम करने में दिलचस्पी नहीं है।

सास ही घर के सब काम कर लेती है। कृष्णा सुनंदा की ननद है कृष्णा की बेटी नेहा है, उसका विवाह तय हुआ है। इस विवाह के लिए आमंत्रण देने हेतु कृष्णा सुनंदा के घर जाती है। नेहा के विवाह में संध्या का सज-धजकर जाना अच्छा नहीं है, क्योंकि वह अब विधवा है।

संध्या उसकी सास-ससुर नेहा के विवाह के लिए जाते हैं। संध्या विधवा है, इसलिए विवाह के अवसर पर उसके साथ कोई बातचीत नहीं करता। कृष्णा की दोनों बहुओं ने भी उनसे बात तक नहीं की। नेहा को भी संध्या के साथ बात करने के लिए समय नहीं है। इस मंगल अवसर पर विधवा का वहां पर होना अपशकुन माना जाता है। ऐसा कृष्णा की बहुएँ कहती हैं। ऐसी अपमानित बातें सूनकर संध्या टूट ही जाती है। फिर संध्या कृष्णा के यहाँ रहना ठीक नहीं समझती। कृष्णा के घर पर वह भोजन भी नहीं करती। फिर संध्या ससुर के साथ घर आती है। वे उसके साथ बलात्कार करतें है। संध्या उसका प्रतिकार करती है। तब संध्या के ससुर के हाथ को चोट आती है। संध्या की सास को घर आने पर पता चला है कि उसके पति ने अपनी बेटी जैसी सुंदर बहु के साथ बलात्कार की कोशिश की है।

दूसरे दिन सुबह संध्या अपने कमरे का दरवाजा नहीं खोलती। तब दरवाजा तोड दिया जाता है। संध्या ने नींद की गोलियाँ खाई है। वह बेहोश हो चुकी है। बेहोश संध्या को अस्पताल में भर्ती कर लेने से डॉक्टर इनकार कर देते हैं। सरकारी अस्पताल में उसे भर्ती किया जाता है। अस्पताल में संध्या की बहन आ जाती है। कुछ पड़ोसी भी आ जाते हैं। नरेश , ससुर कृष्णा को लेकर उनके चोटग्रस्त हाथ पर इलाज करने के लिए डॉक्टर के पास चला जाता है।

सास अस्पताल में बहुत परेशान हो जाती है। सास को पता है कि, अपने पति ने ही संध्या के साथ दुर्व्यवहार किया है। इसीलिए संध्या इस घटना को लेकर सत्य नहीं बोलना चाहिए। सास ईश्वर से प्रार्थना करती है, संध्या ने सत्य कह दिया तो हमारी इज्जत मिट्टी में मिल जाएगी। इसी विचार से वह चिंतित है।

संध्या को होश आ जाता है। संध्या अपनी बहन को कहती हैं, वह विधवा होनेपर पहली बार उस कार्यक्रम में गई। वहाँ पर हुआ अपमान बर्दाश्त नहीं कर सकी। इस दौरान उसकी यह स्थिति हो गई है। संध्या सत्य बात नहीं बताती। संध्या विधवा होनेपर भी सास ने उससे अपनी बेटी की तरह प्यार किया। संध्या, सास और ससुर की तारीफ करती हैं।

संध्या की प्रशंसा की बातों से सास निश्चित हो जाती हैं। सास ईश्वर को और संध्या को धन्यवाद देती है। प्रस्तुत कहानी में लेखिका ने भारतीय समाज व्यवस्था में विधवाओं के नारकीय जीवन का सही चित्रण प्रस्तुत किया है।

१५) 'कुछ कहना है' – नरेंद्र नागदेव

'कुछ कहना है ', नगेंद्र नागदेव द्वारा लिखित कहानी 'नया ज्ञानोदय' के जुलाई, २००३ के अंक में प्रकाशित हुई है। लेखक ने प्रस्तुत कहानी के माध्यम से माँ का अपनी संतान के प्रति दृष्टिकोण प्रतिपादित किया है।

नायक की माँ बीमार है। इसीलिए नायक कुछ साल बाद अपने शहर आता है। घर के बाहर बहुत सन्नाटा है। यह देखकर नायक चिंतित हो जाता है। प्रकाश नायक का मित्र है। वह नायक से कहता है, थोडे पहले आ जाते, तो माँ से बातचीत कर पाता । मॉ अब आधा घण्टे पहले कोमा में चली गई है। नायक बहुत दु:खी हो जाता हैं। वे सोचते है, आधा घण्टा पहले आ जानेसे अपनी माँ के साथ बोल सकता था। आधा घण्टा लेट हो जाने से नायक परेशान हो जाते है।

नायक की माँ बेहोश हो गई है। नायक माँ के पास आकर जोर से आवाज देता है। प्रकाश नायक का मित्र होते हुए भी सुख-दु:ख में नायक की माँ को सँभालता है। प्रकाश युवावस्था में ही कृशकाय हो गया है। वह कम पढ़ा-लिखा है। प्रकाश नायक की माँ का स्वास्थ्य जल्दी ठीक हो जाय इसीलिए वह 'गीता' बड़ी लगन से पढ़ता है। लेकिन माँ के

स्वास्थ्य में फर्क नहीं पडता। डॉ. सिन्हा आकर माँ को दवाइयाँ देकर सलाईन लगाते हैं। नायक अपनी माँ से कुछ कहना चाहता है। इसीलिए नायक डॉ. सिन्हा से माँ के होश के बारे में पूछताछ करता हैं। शेष दवाइयाँ लाने के लिए नायक औषध की दुकान पर जाता हैं। दुकान में नायक को उसके बचपन का मित्र मिलता है। वह मित्र से अपने भूतकाल की घटनाओं को ताजा करते है। नायक ने जबसे अपना शहर छोडा है, तब से नायक बहुत बडा आदमी बनने का सपना देखता है। नायक के बडे भैया मुख्यमंत्री के कोट का बटन लाने के लिए किसी दुकान पर गए है। डॉ. माँ का स्वास्थ्य देखने आते हैं। माँ के स्वास्थ्य में कोई सुधार नही होता। उनकी तबीयत और भी बिगड़ ही जाती है। उनको ऑक्सीजन सिलिंडर की आवश्यकता है। नायक को डॉ. बडे भैया से यह ऑक्सीजन सिलिंडर का इंतजाम करने के लिए कहते हैं। नायक अपने भैया को शहर में बटन की दुकानों में ढूँढते है। लेकिन , वह नहीं मिलते। नायक चिंतित हो जाते हैं। शहर का कोना - कोना छान मारा, लेकिन उन्हें ऑक्सीजन का सिलेंडर नही मिला। माँ को प्रकाश और नायक दूसरे अस्पताल ले जाते हैं। भैया को मुख्यमंत्री के कोट का बटन मिल जाता है। इसीलिए मुख्यमंत्री खुश है। वह भैया को बधाई देते हैं।

प्रस्तुत कहानी में लेखक ने नायक के मनोविज्ञान को दर्शाया है। बडे भाई के आधार पर लेखक ने नई पीढ़ि की वास्तविकता को प्रस्तुत किया है। बडे बेटे को अपनी माँ के प्रति प्रेम, अपनापन नहीं है। बीमारी के कारण माँ मृत्यु की कगार पर है। बेटा, माँ की जिम्मेदारी नहीं उठा पाता। बेटे की स्वार्थी वृत्ति को कहानी में प्रस्तुत किया गया है।

१६) 'जंगल का सपना' - विजय

'जंगल का सपना' विजय द्वारा लिखित कहानी 'नया ज्ञानोदय' के मई, २००३ के अंक में प्रकाशित हुई हैं। प्रस्तुत कहानी आदिवासी जन-जीवन पर आधारित है।

कहानी की नायिका अंजी है। नायक अन्होर है। जंगल बहुत सुंदर है। नायिका को जंगल बहुत अच्छा लगता है। नायिका आदिवासी लोगों की व्यथा बताती है। एक महिना पहले जंगल विभाग के अधिकारी कब्जा ग्रहण करके आदिवासियों को जंगल से निकाल दिया हैं। उनके विराध मे आदिवासी लोग आंदोलन चलाते हैं। वे अपनी संस्कृति को मजबूत बनाए रखना चाहते हैं।

अन्होर स्कूल चलाता है। यह बात उसके काका को बिल्कुल पसंद नहीं है। उसके काका सिमोर कहते है नुरही गाँव में गोंड़ राजा था। वहाँ पर जंगल अच्छा था। लेकिन अंग्रेज लोगों ने जंगल पर अधिकार ग्रहण किया है। अंग्रेज लोग आदिवासी लोगों का शोषण करते हैं। जंगल की जगह पर तहसील कार्यालय की मंझील बन गई, बाँध बन गया। वहाँपर लोगों को आदिवासियों को झोपडी के बदले ईट - सिमेंट के घर सरकार उपलब्ध कर देना चाहती है। वहां पर सरकार जडी बूटियों की कंपनी खोलना चाहती है। इस प्रकार वहां पर परिवर्तन हो रहा है। लेकिन आदिवासी लोग इसका विरोध करते हैं। आदिवासी लोग जंगल को ही अपने जीवन का आधार मानते हैं। आदिवासी लोगों का जीवन जंगल से ही है। सरकारी अधिकारी लोग आदिवासियों का जीने का सहारा ही छीन रहे हैं। इन लोगों को जंगल का प्राकृतिक सौंदर्य अच्छा लगता है। सरकारी अधिकारियों के व्यवहार के कारण आदिवासी लोग आतंकवादी बन गए हैं।

पुलिस कहती है, नायक अन्होर ने पेड़ काटा है। पुलिस उसे गिरफ्तार करने जाती है। उनपर अन्होर हमला करता है। इसीलिए उसको गिरफ्तार किया है। अन्होरे के काका सिमोर को भी गिरफ्तार किया है। यह आदिवासी लोग सरकारी अधिकारियों के अत्याचार से तंग आ गए हैं।

पुलिस अन्होर और उसके काका सिमोर को रिहा कर देती है। अन्होर पाठशाला में बच्चों को विविध अखबारों की घटनाएँ पढकर सुनाता हैं। अंजी और अन्होर जंगल छोड़ते हैं।

उस समय उनको बहुत दु:ख होता है। कुछ दिन बाद उन्होंने जंगल की ओर देखा। जंगल की जगह पर इमारतें खडी हो गई हैं। अंजी और अन्होर बरखेड़ा पहुँच जाते हैं। अंत में नायिका अंजी जंगल वापस लौटने का सपना देखती है।

आदिवासी संस्कृति पर सरकारी विभागों के अधिकारियों का दमन यह प्रमुख समस्या प्रस्तुत कहानी में चित्रित है।

१७) 'तुम हो' – गोविंद मिश्र,

'तुम हो' गोविंद मिश्र द्वारा लिखित कहानी 'नया ज्ञानोदय' के मई, २००३ के अंक में प्रकाशित हुई है। लेखक ने प्रस्तुत कहानी के माध्यम से नारी पीड़ा युक्त जीवन यापन करती है। इस पक्ष का चित्रण किया है।

सुषमा कहानी की नायिका है। उसका परिवार सामान्य है। सुषमा के पिता सुषमा के ससुराल जाते हैं। तब सुषमा के ससुरालवाले सुषमा के पिता का अपमान करते हैं। यह बात सुषमा के पिता को अच्छी नहीं लगती। वे सुषमा को साथ लेकर अपने घर आते हैं।

सुषमा की सास, ससुर, ननद सभी यात्रा करके लौटते हैं। उसका पति शराबी है। भगवान की यात्रा करके भी पति में सुधार नहीं होता है। समाज सुषमा कोही दोष देता है। सुषमा, पति रघु के साथ जीवन यापन नहीं करना चाहती।

सुषमा का पति रघु इन्जीनियर हैं, सुषमा डॉक्टर है। विवाह के पहले यह दोनों घूमते रहते हैं। सुषमा -रघु का विवाह होनेपर, उनमें असामंजस्य वातावरण निर्माण होता है। वह पति की प्राइवेट नौकरी पर चिंतित होती है। वह अपना क्लिनिक सैट करने के लिए सोचती है। पत्नी का कहना है, परिवार में एक नौकरी करता है, तो दूसरा प्रैक्टिस में लगे। पति इन भविष्य की बातों को महत्त्व नहीं देता।

सुषमा अपने पति के साथ घृणा करने लगती हैं। वह मन में उम्मीद रखती है, पति सुधर जाए। सुषमा के सास-ससुर, बहू की स्थिति समझते है। बहू पूरी तरह से टूट गई हैं। उसे सास, ससुर विश्वास दिलाते है कि, पति सुधर जाएगा। उसे अपने साथ यात्रा पर ले जाते हैं। इससे वह हँसे, बोले। उसकी मानसिक स्थिति दयनीय हो गई हैं। सुषमा के पिता अपनी बेटी की जिंदगी के बारे में परेशान है। सुषमा पति के स्वभाव से तंग आ गई है। रघु-सुषमा के विवाह विच्छेद का मामला कोर्ट में जाता है। सुषमा के पिता सुषमा के ससुराल वालों को कठोर सजा के लिए प्रयास करते हैं।

सुषमा के पिताजी अपनी बेटी के विवाह में उनके द्वारा दी गई हर चीज तथा वस्तुओं को वापस माँगते हैं। सुषमा अपने ससुराल के लोगों से शारीरिक और मानसिक यातनाओं की शिकार बनती हैं। सुषमा के ससुराल और मायके के परिवारों में दुश्मनी निर्माण होती हैं। बेटी को दिये हुए आभूषणों में से हिरों का सैट नही हैं। इस हीरों के सैट को लेकर दोनों परिवारों में विवाद निर्माण होता है। सुषमा के साथ ससुरालवालों किया हुआ अत्याचार सुषमा के पिता पुलिस को बताना चाहते है। वकील कहते है कि बेटी के साथ कानून है। इसीलिए चिंता की कोई आवश्यकता नहीं है। सुषमा दु:खी हो गई है। सुषमा जीवन से निराश हो गई हैं। वह दो परिवारों के लोगों के रिश्तों में फंस गई हैं। इन सभी बातों से वह दूर रहना चाहती है। वह अकेलापन महसूस करती है। सुषमा पति के स्वभाव से त्रस्त है। वह पति से तलाक लेना चाहती है। इन सभी लोगोंसे जूझते हुए वह आत्मनिर्भर बन गई है। इस कारण वह कठोर निर्णय पर आ गई है। सुषमा के इस परिवर्तन से पिता को यकीन ही नहीं होता।

इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में नारी मन की सहज अभिव्यक्ति का चित्रण है। ससुराल और मायके के परिवार में बनते -बिगड़ते संबंधों को देखकर नारी असुरक्षितता महसूस करती है। पति के स्वभाव से वह विद्रोह करती है जीवन में सामंजस्य की आवश्यकता होती है। यह पक्ष सशक्तता के साथ लेखक ने चित्रित किया है।

१८) 'सरपट' – अवधेश प्रीत

'सरपट' अवधेश प्रीत द्वारा लिखित कहानी 'नया ज्ञानोदय' के अगस्त, २००३ के अंक मे प्रकाशित हुई है। 'नालंदा विशाल शब्दसागर में' 'सरपट' का अर्थ दिया है, - ''(संज्ञा पु.) (हिं), घोड़े की एक प्रकार की तेज चाल। (क्रि.वि.)(हिं) घोंड़े की उक्त चाल की तरह तेज या दौडते हुए।''९

लेखक ने प्रस्तुत कहानी के माध्यम से नायक की मानसिकता का चित्रण किया है। प्रस्तुत कहानी में नायक चौधरी है। विवेच्य कहानी में चौधरी के रहन-सहन का यथार्थ चित्रण सुंदरता से चित्रित किया है। चौधरी को घोडों में अभिरुचि हैं। उनका घोड़ों का अस्तबल हैं। उनके टट्टू बोझ उठाने में सहायता करते हैं। वे टट्टू अब काफी थक गए है। उनको बोझ उठाने के लिए गधों की आवश्यकता होती है। उनके गाँव में गधों की मात्रा काफी कम है। वह कुम्हारों के गाँव जाकर गधों को खरीदने का विचार करते है। कुम्हारों को आर्थिक विपन्नता का सामना करना पड्ता है। कुम्हार और चौधरी में लेन-देन की बातें होती हैं। चौधरी एक गधे पर एक मन अनाज देने को तैयार होते हैं। चौधरी एक शानदार घोड़े को देखते हैं। उनके अस्तबल में ऐसे शानदार घोड़े की कमी महसूस होती है।

चौधरी के गाँव में एक तेल का व्यापारी आ जाता है। चौधरी और तेल व्यापारी में लेन-देन का प्रस्ताव मंजूर होता है। चौधरी व्यापारी से अपने गाँव के लिए तेल लेते हैं। चौधरी उसको बदले में पानी देना चाहते हैं।

दूसरा व्यापारी चौधरी के घोड़ों का अस्तबल देखता हैं। उस व्यापारी को अरबी घोड़े की कमी महसूस होती है। यह व्यापारी चौधरी अरबी घोड़े खरीदने के बारे में सोचता हैं। दूसरे व्यापारी के गाँव में भी पानी की किल्लत है। व्यापारी के एक परिचित के पास अरबी घोड़ा है। इसीलिए, उस घोड़े को खरीदने के लिए चौधरी दूसरे व्यापारी के गाँव को

भी तेल के बदले में पानी देना चाहते है। लेकिन तेल व्यापारी यह बात स्वीकार नहीं करता। चौधरी का तेल व्यापारी पर विश्वास नहीं है। आखिर व्यापारी चौधरी के गाँव को तेल देने के लिए तैयार होता है। चौधरी अरबी घोड़े को खरीदता है।

प्रस्तुत कहानी में लेखक ने नायक के रहन-सहन को दर्शाया है। प्रस्तुत कहानी में नायक की व्यापार मनोवृत्ति के दर्शन होते हैं।

१९) **'घर पहाड़ होता है'** -नफीस आफरीदी

'घर पहाड होता है', नफीस आफरीदी, द्वारा लिखित कहानी 'नया ज्ञानोदय' के अगस्त, २००३, के अंक में प्रकाशित हुई है। लेखक ने प्रस्तुत कहानी के माध्यम से शिक्षा के महत्त्व को दर्शाया है।

कहानी का नायक किरपाल है, उसका परिवार सामान्य है। किरपाल के दादा का खेत नीलाम हो जाता है। आर्थिक विपन्नता के कारण किरपाल के परिवारवालों को जूझना पडता हैं। किरपाल के पिताजी का नाम हरदयाल है। उनका बचपन सामान्य परिवार में बीता। किरपाल के दादू के भाई-बंधो ने किरपाल के घर की सारी चीजों पर अधिकार ग्रहण किया है। दादू का हरदयाल नामक पुत्र है। हरदयाल दादू पर ही निर्भर है। दादू अपने पुत्र को शेष हुई चीजें और घर सँभालने को कहते है। दादू अपने परिवारके आर्थिक स्तर को सहायता मिल जाए इस हेतु साइकिल की दुकान चलातें है। उनको अपने परिवार के प्रति प्यार है। एक दिन दादू की मृत्यु हो जाती है। फिर पूरा परिवार अकेला हो जाता है।

उसके पिता पर सारी जिम्मेदारी आ जाती है। उनका साइकिल का व्यापार छोटा है। इसीलिए उन्हे आर्थिक विपन्नता का सामना करना पडता है। पिता को अपने दो बेटियों के विवाह की चिंता हैं। बेटा किरपाल उनको बोझ लगने लगता है। बेटियाँ पहाड़ जैसी लगती है। माँ और पिता को परिवार के लिए हर स्थिति से जूझना पडता है। एक दिन दुकान से सभी साईकिलों की चोरी हो जाती हैं। पिता निराश हो जाते हैं। पिता पुलिस को साइकिलों की चोरी

की रिपोर्ट लिखवाते हैं। लेकिन कुछ हाथ नहीं आता। किरपाल पढ़-लिखकर अध्यापक बनना चाहता है। लेकिन, उसकी पढाई के लिए उनके पास पैसे नहीं है।

लेकिन किरपाल को पढ़ना है। पढ़ाई को लेकर पिता और बेटा में संघर्ष होता है। किरपाल क्रोधित होकर पढ़ाई का खर्चा भी माँगने के लिए इनकार करता है। किरपाल खाने-पीने का भी विरोध करता हैं। उसकी पढ़ाई में अभिरुचि है। लेकिन परिवार के लोगों के कारण वह अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर सकता। वह निराश हो जाता है। पिता अपनी बची हुई तीन साइकिलें बेचते हैं। फिर वह नौकरी की तलाश में जाते हैं। इन विचित्र परिस्थिति से किरपाल को लड़ना पडता है।

किरपाल सबसे बडा है। उसकी छोटी बहन नौकरी करती है। पिता को भी काम मिल गया है। लेकिन बेटे को अब तक नौकरी नहीं मिली वह सोचता है, बहन नौकरी करने के कारण पिता किरपाल पर क्रोधित नहीं हो जाएँगे। लड़की छोटी होनेपर भी वह कमाती है, और तुम कुछ काम नहीं करते। इस बात पर बेटे को पिता हमेशा डाँटते है। पिता अपने बेटी की तुलना किरपाल से करते हैं। पिता की इन बातों से किरपाल घर से भाग जाना चाहता है। वह अपने घर से भाग जाने का निर्णय में परिवर्तन करता है। वह अपने आपको कमरे में बंद कर लेता है। किसी से बातें भी नहीं करता।

उसकी छोटी बहन किरपाल को सहानुभूति दिखाती रहती है। पढ़ाई का खर्च वह बहन करने की बात करती है। बेटे के विवाह के कारण पिता परेशान है। बेटी अपने परिवार के लिए सहायता करती है। उसके भविष्य के प्रति पिता चिंतित होते हैं। बेटा कमजोर हो जाता है। पिता के ऐसे व्यवहार से वह अपनी किताबें जलाने की सोचता है।

अंत में पिता में परिवर्तन होता है। वह अपने बेटे किरपाल से माफी माँगते हैं। उसे पढ़ाने की जिम्मेदारी स्वीकार कर के उसे कलेक्टर बनाना चाहते हैं। इन सब बातों से किरपाल

के मन में उम्मीद निर्माण होती हैं। किरपाल को पिता का साथ मिलने पर वह निश्चिंत हो जाता है। किरपाल घर का नाम रोशन करना चाहता है।

प्रस्तुत कहानी में बेकार परिवार की व्यथा, शिक्षा को महत्त्व देना आदि पक्ष सशक्तता से चित्रित किए गए हैं।

२०) 'उसकी वह अंतिम रेल यात्रा'- संतोष दीक्षित

''उसकी वह अंतिम रेल यात्रा'' संतोष दीक्षित द्वारा लिखित कहानी 'नया ज्ञानोदय' के अगस्त, २००३, के अंक में प्रकाशित हुई है। प्रस्तुत कहानी के माध्यम से लेखक ने वृद्धा की ईमानदारी को दर्शाया है। विवेच्य कहानी की नायिका वृद्धा हैं। इसमे वृद्धा की यात्रा का वर्णन किया गया है। जिस रेल गाडी से वृद्धा यात्रा कर रही है, उसी रेल से पिंड़दान करके श्रद्धालू अपने-अपने घर लौट रहे हैं। वृद्धा अकेली यात्रा कर रही है। उसके बगलवाली सीट पर एक मुसलमान किसान बैठा है।

वृद्धा कामगार है। वह खेत में काम करते समय, रसोई में भोजन बनाते समय उकडू बैठकर की काम करती है। स्टेशन पर यात्रियों में स्थिति तनावपूर्ण हैं। किसी गाँव में कुछ व्यक्तियों की हत्या हो गई हैं। इस खबर से अखबारों की बिक्री बढ़ गई है। वृद्धा जमींदार के यहाँ काम करती है। जमींदार बीमार है। वह बीमार होने के कारण वृद्धा मालिक के स्वास्थ्य का हाल पूछने के लिए उनके घर जाती है। जमींदार के परिवारवालें उनके साथ नहीं रहते। जमींदार बीमार होनेपर भी उनका बेटा, पत्नी, उनको देखने के लिए नहीं जाते। जमींदार अकेला रहता हैं। परिवारवालों का कहना है, जमींदार अत्याचारी हैं। वृद्धा के साथ जमींदार अच्छा व्यवहार करता है। वह उसकी सहायता करता है। वृद्धा के पति की मृत्यु के दौरान जमींदार ने ही उसको कंधा दिया था। अपने मालिक के एहसानों पर वह वृद्धा जीवन यापन करती हैं। वृद्धा का पोता उसके साथ मालिक के घर जाने के लिए तैयार नहीं होता।

वृद्धा का कहना है , अब जमाना बदल गया है। आज कल के लड़कों को मालिकों के घर भोजन करना ठीक नहीं लगता। जमींदार के प्रति लोग कई बातें जानते हैं। जमींदार के दादा परदादा का इस इलाके में आतंक था। सब लोग उनसे डरते थे। फिर जमींदार के इलाके में डकैती पडी। उसमें उनका बेटा और पोता मारे गए। इसीकारण जमींदार के साथ परिवार के सभी लोगों ने अपना देश ही छोड़ दिया। जमींदार ने गाँव छोड़ते समय वृद्धा को अपनी जायदाद का कुछ भाग दे दिया ।

प्रस्तुत कहानी में लेखक ने वृद्धा की मानसिकता का वर्णन किया है।

२१) 'वह दूसरी'– मृदुला गर्ग

'वह दूसरी,' मृदुला गर्ग' द्वारा लिखित कहानी 'नया ज्ञानोदय' के सितंबर, २००३ के अंक में प्रकाशित हुई है। प्रस्तुत कहानी का आरंभ आत्मकथात्मक शैली में है।

नायिका के दादा की प्रथम पत्नी की मृत्यु होनेपर उन्होंने दूसरा विवाह किया है । नायिका को अपनी माँ से दादी के बारे में जानकारी प्राप्त हुई है। दादा की पहली पत्नी की याद हमेशा सब लोग निकालते हैं । दूसरी पत्नी जब घर पर नई दुल्हन बनकर आई तो, वहाँ कार्यक्रम चल रहा है। गज़ले गाई जा रही है। गज़लों में मादकता है। सब सुन रहे हैं। कोई मर्द गज़ल गाने से मना करता है और गालियाँ भी देता है। दूसरी पत्नी अपनी आपबीती सुनाती है। उसकी घर की स्थिति सामान्य हैं।

नायिका की माँ वकील की बेटी है। माँ दूसरी के बारे में जानकारी देती है ।माँ को तो पहली ही अच्छी लगती है। पहली सीधी- साधी है। उसकी जानकारी सब को है। उसका स्वभाव अच्छा है। पहली की यादें माँ को सताने लगती हैं। पहली और दूसरी में स्वभाव के तौरपर बहुत ही भिन्नता है। दूसरी की तुलना में , पहली की ही तारीफ होती है। वसंत पंचमी के त्यौहार के लिए दूसरी को सज-धजकर रहना अच्छा लगता है। पिताजी नौकरी के लिए

शहर जाते समय नायिका की माँ भी उनके साथ जाती है। पहली के बच्चे के जन्म के दौरान उसकी मृत्यु हेा गई है। दूसरी बहुत सुंदर है। वह तस्वीर में भी बहुत सुंदर दिखाई देती है। दूसरी अपने ससुराल में अधिक घूल-मिल जाती है।

इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में नायिका के मानसिक अंतरंग का चित्रण किया गया है।

२२) 'प्रेम, सपना और मृत्यु' - अजित हर्षे

'प्रेम , सपना और मृत्यु', अजित हर्षे द्वारा लिखित कहानी 'नया ज्ञानोदय' के सितंबर, २००३ के अंक में प्रकाशित हुई। लेखक ने प्रस्तुत कहानी के माध्यम से मन में उत्पन्न हानेवाले विविध भावों का वर्णन किया हैं।

प्रस्तुत कहानी में नायक है। उसकी पत्नी को भयानक सपनें नजर आते हैं। सपनों में प्रेत तथा हत्या के दृश्य नजर आते हैं। वह अपना हर सपना नायक को बताती है। उसके सभी सपने डरावने ही हैं। नायक समाजशास्त्र का प्राध्यापक है। उसे मनोविज्ञान में अभिरुचि है। नायक पत्नी को समझाता है, सपनों का वास्तविकता के साथ कोई संबंध नहीं है।

नायिका की जब मानसिक स्थिति ठीक नहीं होती। उसे भयानक सपनें नजर आते हैं। नायिका अपने आपको असुरक्षित महसूस करती है। लेकिन नायिक के दिलो-दिमाग पर डर छा गया है। विविध घटनाएँ ' सपनों ' के द्वारा उसे दिखाई देती हैं। नायिका पढ़ी-लिखी है।

नायिका एक दिन बहुत डरावना सपना देखती है। उसके सपने में नायक आता हैं। सपनें में वह देखती है नायक की तबीयत ठीक नहीं वह जख्मी हो गया है। इसी कारण वह डॉक्टर के पास जाता है। डॉक्टर के पास से निराश होकर लौट आता हैं। पत्नी यह सपना नायक को बता रही हैं। लेकिन नायक को सपनों पर विश्वास ही नहीं हैं।

नायक के पिताजी पी.डब्ल्यू.डी. में बाबू थे । वे कॉलोनी में रहते थे। नायक जब छोटा था। तब उसकी बचपन की सहेली माया नाम की लडकी थी। वह पड़ोस में रहती थी। नायक

से वह तीन-चार साल उम्र में बड़ी थी । वें दोनों एक साथ स्कूल आते-जाते थे माया के पिताजी उसी कॉलोनी में रहते थे। उन्हें चार बेटियाँ थी। तीन बेटियों के विवाह हो गए हैं। माया का विवाह अब तक नही हुआ। नायक आठवी कक्षा में पढ़ता था। एक दिन माया स्कूल में नहीं आती। माया नायक को छोडकर अन्य किसी लड़के के साथ प्यार का चक्कर चला रही है। माया की यह बात उसके घरवालों को पसंद नहीं है। लेकिन माया अपने घरवालों के विरोध के बावजूद भी अपने प्रेमी को दिलोजान से चाहती है।

नायक किताब के पन्नों में एक लिफाफा रखता है। उस लिफाफे में 'प्राइवेट' लिखकर माया को देता है। नायक को महसूस होने लगता है वह प्यार में खो चूका है। लेकिन माया अन्य किसी लड़के के साथ साईकिल पर धूर रही है। यह बात नायक को पसंद नही है।

माया अपनी ही दुनिया में खो गई हैं। माया के पिताजी सेवानिवृत्त होनेपर वह किराये पर मकान लेकर रहने लगते हैं। नायक माया को लिफाफे की याद दिलाता है। उसके पिताजी माया के लिए एक अच्छे लड़के के बारे में सोचते हैं। उन्हे एक अच्छा लड़का पसंद आता है। जिसके साथ वे माया का विवाह करना चाहते हैं ।

प्रस्तुत कहानी पूर्वदीप्ति शैली में लिखी गई है। प्रस्तुत कहानी मनोवैज्ञानिक पहलुओं का उजागर करती हैं। लेखक ने असफल प्रेम विवाह की समस्या को प्रस्तुत कहानी में चित्रित किया है।

२३) 'मेरे अपने' - उषा राजे सक्सेना

'मेरे अपने', उषा राजे सक्सेना द्वारा लिखित कहानी 'नया ज्ञानोदय' के सितंबर, २००३ के अंक में प्रकाशित हुई है। लेखिका ने प्रस्तुत कहानी के माध्यम से नारी के अकेलेपन पर प्रकाश डाला है।

प्रस्तुत कहानी की नायिका का नाम 'एला' है। 'एला' अपने पिता से मिलने के लिए रेस्तराँ में जाती है। एला मिर्चा से प्यार करती है। एला के पिता का व्यक्तित्त्व प्रभावशाली है।

एला लंदन जैसे शहर में अपना जीवन यापन करने के लिए रेस्तराँ में पहली बार नौकरी करती है। वहाँ पर वह ग्राहकों से मुस्कराहट के साथ बातें करती है। उसके पिता एला से दूर रहते हैं। वह अपनी बेटी से मिलने के लिए आते हैं । रेस्तराँ में बैठकर एला अपने पिता इंतजार करती है।

रेस्तराँ बहुत ही आकर्षक है। पिता की पसंद उँची है। पिता की पसंद में यह रेस्तराँ काफी छोटा है। एला ने जान-बूझकर यह रेस्तराँ चुन लिया है। वह पिता से मिलना ही नहीं चाहती । लेकिन मिर्चा के कहने पर वह रेस्तराँ में आ गई है। वह सात साल बाद अपने पिता से मिल रही है। वह अपना अतीत भूल गई है। फिर भी अपने पिता होने के कारण एला के मन में उनसे मिलने की बेचैनी बढ़ रही थी। वह जानना चाहती है कि, पिता का व्यक्तित्त्व आज भी प्रभावशाली है या नहीं ? वह उनसे मिलने के लिए बेचैन हो गई है। उसके पिता रेस्तराँ में आ जाते हैं। एला अपने पिता को देखकर खुश होती है।

कई सालों बाद एला को अपने पिता का स्नेह मिला है। एला और उसके पिता दोनों रेस्तराँ में बैठकर बातें करते हैं। पिता को वह रेस्तराँ बहुत छोटा लगता है। एला स्वतंत्र जीवन जीने वाली है। उसे पिता के दमन में रहना पसंद नही हैं। इसीलिए उसने अपना घर छोड़ा है। पिता का व्यक्तित्त्व आकर्षक है। उनका रहन-सहन ऊँचा है। मिर्चा का रहन-सहन ऊँचा नहीं है। पिता बेटी को आने साथ स्पेन शहर में चलने के लिए कहते हैं। एला उनके साथ स्पेन शहर जाने के लिए तैयार नहीं हैं। पिता उसे छोड़कर नौकरी के कारण कई सालों से दूसरे शहर **में बसे हैं। एला लंदन में अकेली रहती है। वह अपने पिता के साथ शहर जाती है तब पिता के आचार-विचार से उसे रहना पडता है। किससे मिलना है,? क्या खाना है,? क्या नहीं खाना** है ? इन सभी नियमों से एला तंग आ गई हैं। इसलिए एला अपने शहर लंदन वापस जाती है।

पिता को एला की याद कभी नहीं आती । वे हमेशा अपने काम में ही व्यस्त रहते हैं। इसलिए एला क्रोधित होती है। पिता बेटी को उसके जीवन के बारे में पूछते हैं। वह मिर्चा से प्यार करती है। वह हंगेरियन है। यह सुनकर उसके पिता खुश हो जाते हैं। पिता और बेटी में जो परस्पर तनाव था , वह दूर हो जाता है। पिता अपनी बेटी के खूबसूरत व्यक्तित्त्व की तारीफ करते हैं। वे एला मिर्चा के विवाह के लिए स्वीकृति देते हैं। मिर्चा एला के पिता से मिलना चाहता है। एला और मिर्चा विवाहित हो जाते हैं ।

प्रस्तुत कहानी में लेखिका ने बेटी को अपने पिता प्रेम से वंचित होनेपर उसकी दयनीय स्थिति का चित्रण किया है ।

२४) 'मन मोबाईल' - राजेश जैन ,

'मन मोबाईल,' 'राजेश जैन ' द्वारा लिखित कहानी 'नया ज्ञानोदय' के सितंबर, २००३ के अंक में प्रकाशित हुई है ।लेखक ने प्रस्तुत कहानी के माध्यम से सड़कों के महत्त्व को दर्शाया है।

प्रस्तुत कहानी में नायक सडको की दुर्दशा देखता है। नायक रोज सुबह घूमने जाता है । अनेक वृक्षों को देखता हैं। वह वृक्षों से बातचीत करता है। सड़कों से उसे सहानुभूति है। सभी वृक्षों को वह प्यार से देखता हैं। उसे अचेतन वस्तु भी चेतन महसूस होती है। सड़कों की मरम्मत ठीक तरह से न होने के कारण नायक निराश हो जाता है । जैसे लोग बिजली, टेलिफोन, पेयजल के नल के निर्माण के लिए बार-बार सड़कों की खुदाई करते है, इससे नायक चिंतित है। नायक के मित्र के हृदय की शस्त्रक्रिया होती है। मित्र के बेटे के पैर की सर्जरी होती है। यह सभी घटनाएँ देखकर नायक को सडके भी ऑपरेशन टेबल पर लेटी मरीज जैसी लगती है।

नायक सुबह घूमने के लिए जॉगिंग सूट में निकलता है। वह प्रकृति के हर वृक्षों से, पंछियों से बातें करता हैं। नायक जब स्टेशन पर होता है। तब वह रेल की पटरी पर कान लगाता है। वह अपने पापा से बताता है कि, रेल कितनी दूरी पर है। उसी समय पार्क में लोग घूमते हैं। कुछ लोग व्यायाम करते देखकर उसे अच्छा लगता। उस पार्क में वह गुलमोहर के तीन पेड देखता हैं। वह तीन पेड उसके मित्र हैं। वह पेडों से भी बाते करता है।

नायक के कई सालों से गुलमोहर के तीन पेड मित्र हैं। पहला पेड हरा है। दूसरा पेड भी हरा है, और फूलों से भरा हैं। तीसरा पेड हरा-भरा नहीं है और उसमें न फूल लगे है। तीनों पेडों के नीचे मिट्टी एक जैसी होने पर भी उनका फूलना-फलना अलग-अलग है। इससे वह चिंतित हो जाता है।

प्रस्तुत कहानी यथार्थवादी कहानी है। लेखक ने प्रकृति के महत्त्व को स्पष्ट किया है। पेड, पौधों की संवेदनाओं का मनोहारी वर्णन प्रस्तुत कहानी में आया है।

२५) 'रात में सागर'- चंद्रकांता,

'रात में सागर' 'चंद्रकांता' द्वारा लिखित कहानी 'नया ज्ञानोदय' के अक्टूबर, २००३ के अंक में प्रकाशित हुई है। लेखिका ने प्रस्तुत कहानी के माध्यम से एक अपाहिज नारी की मानसिक स्थितियों का चित्रण किया है।

प्रस्तुत कहानी में 'धीरेंद्र' बेटा है। उसकी पत्नी 'श्रेया' है। 'वीरजी' दूसरा बेटा है। उसकी पत्नी 'प्रेया' है। वीरजी, धीरेंद्र की माँ बीमार है। उसका बेटा वीरजी अमेरिका में रहता है। बेटी उमा, बेटा धीरेंद्र भारत में रहते हैं। बेटे से अलग रहने पर माँ दु:खी नहीं होती। माँ जब अमेरिका में बेटे से मिलने जाती है। तब वहाँ पर कार्पेट से गिरने पर अपाहिज बन गई है। अब माँ लॉस एंजिल्स में रहती है। उसे अस्पताल में भर्ती किया गया है। बेटे-बहू नौकरी करते हैं। माँ की शुश्रूषा करने के लिए उनके घर पर कोई नहीं है। इसीलिए माँ को अस्पताल में रखा

जाता है। वहाँ पर बेटे, बहू उसे अस्पताल में रोज मिलने आते हैं। माँ अस्पताल में रहने से तंग आ गई है। माँ अपने घर जाने के लिए तडपती है। लेकिन उसे घर नहीं लाया जाता। इसीलिए उसे क्रोध आ जाता है। वह घर आने के बाद ही प्राण त्याग देना चाहती है। अस्पताल में माँ की सेवा नर्स करती है।

एक दिन माँ को दूसरा बेटा घर लाता है। घर लानेपर माँ के लिए विविध सुविधाएँ प्रदान करता हैं। लेकिन बहू सास की सेवा करते-करते थक जाती है। बहू प्रेया कहती है, संकट में रिश्तेदार सहायता नहीं करते। माँ व्हील चेअर से नीचे नहीं उतरती। वह गूँगी हो गई है। पहला बेटा धीरेंद्र माँ से दूर रहने के कारण वह उसकी सेवा नहीं कर पाता।

बेटे का कहना है, माँ को घर में रखने से सारी सुविधाएँ खरीदनी पडती हैं। अस्पताल में सभी सुविधाएँ होती है। इससे किसी को परेशानी नहीं होगी। बल्कि, अस्पताल में ही माँ को रखना बेटों को उचित लगता । धीरेंद्र को अपने पिता की सेवा करने का अवसर मिला था। लेकिन, उसे अपनी मां की सेवा करने का अवसर प्राप्त नहीं हुआ । धीरेंद्र की माँ को अस्पताल में रखने के कारण वह दु:खी है। उसके घर के लोग उसे मिलने के लिए अस्पताल आ जातें है , तब वह खुश हो जाती है। धीरेंद्र की माँ कभी नर्स को सताती है तो कभी वह भोजन करना पसंद नहीं करती। डॉक्टर की सलाह पर धीरेंद्र अपनी माँ को घर ले जाता है, वह धीरेंद्र के घर आने पर खुश हो जाती है।

औद्योगिकरण की वजह से मानव आज अपनी जन्मदात्री माँ को भी भूल गया है। इस पक्ष का सशक्त चित्रण प्रस्तुत कहानी में चित्रित किया है।

२६) 'धूल की एक परत' - तरुण भटनागर

'धूल की एक परत ,' तरुण भटनागर, द्वारा लिखित कहानी 'नया ज्ञानोदय' के अक्टूबर , २००३ के अंक में प्रकाशित हुई है। लेखक ने प्रस्तुत कहानी के माध्यम से नारी के अकेलेपन का चित्रण किया है।

कहानी का नायक रेस्ट हाऊस में रहता है। नायक के पास शाम को हरि नाम का नौकर आ जाता है। हरि लिफाफा नायक को देता है। लिफ़ाफा बड़ा ही आकर्षक है। रानी साहेब ने हरि से वह लिफाफा नायक को देने के लिए कहा है। उसमें नायक के लिए आमंत्रण दिया है। हरि नायक को रानी महल में आने के लिए कहता है।.

रानी और राजा का उस जमाने में बहुत सम्मान होता था। वह गरीब लोगों की सहायता करते थे। यह महल राजा की पसंद से बना था। लोग भी महल बनाने के लिए सहायता करते थे। राजा लोकाभिमुख शासन चलाता था।

राजी जब विवाहित होकर आई थी, तब अकाल पडा था। राजा एक ही समय भोजन करता था, एक समय का भोजन गरीबों को बाँट देता था। दूसरे राज्यों से धान खरीदा जाता था। राजा स्वयं उनका हिसाब-किताब रखता था। राजा गरीब लोंगों की सहायता करता हैं। अब राजा की मृत्यु हो गई है। रानी विधवा हो गई है।

रानी अब वृद्धा हो गई है। नायक रानी को मिलने के लिए उसके महल में चला जाता है। अब उस महल में रोशनी नहीं है। वहाँ कोई पहरेदार नहीं है। रानी नायक का स्वागत करती है। नायक रानी का महल देखकर खुश को होता है।

अब रानी की बेटी गुजरात के जामनगर में रहती है। वह कभी-कभी रानी से मिलने आ जाती है। महल में रोशनी भी नही है। रानी को आर्थिक विपन्नता का सामना करना पड रहा है। उसने बिजली का बिल भी नहीं अदा किया। अकाल के समय रानी के महल की वस्तुओं की नीलामी होती हैं। यह देखकर रानी रो पडती है। लोग रानी से अच्छी तरह से व्यवहार नहीं

करते। उन दिनों रानी महारानी होनेपर महल में कोई भी काम नहीं करती थी। लेकिन, आज उसे अपना काम स्वयं करना पड रहा है।

रानी की मौत जब महल में होगी तब महल में उसकी लाश वैसी ही सडी रहेगी। इतने बडे महल में किसी को पता भी नहीं चलेगा। तब लोग कैसे समझ जाएँगे कि, रानी मौत हुई है। इसीलिए वह हरि को महल में जगह देती है। क्यों कि, रानी की मौत होनेपर उस के बारे में रानी के बेटी को वह बता सके कि उसकी माँ मर चुकी है।

प्रस्तुत कहानी में लेखक ने राजा-राजी के प्रजा प्रेमी गुण पर प्रकाश डाला है। प्रस्तुत कहानी काल्पनिक इतिहास पर आधारित है।

२७) 'धोबी का कुत्ता' - कृष्ण बिहारी

'धोबी का कुत्ता,' कृष्ण बिहारी द्वारा लिखित कहानी 'नया ज्ञानोदय' के अक्टूबर, २००३ के अंक में प्रकाशित हुई है। लेखक ने प्रस्तुत कहानी के माध्यम से मजदूरों के शोषण को दर्शाया है।

प्रस्तुत कहानी के नायक का नाम 'अवधेश' है। उसका मित्र रघुवीर है। दोनो एक ही गाँव के हैं। दोनों मित्र एक विदेश स्थित कंपनी में काम करते हैं। उनका वहाँ पर कपडे धोने का काम होता है। अर्थात् वे धोबी का काम करते हैं। दोनों में गाढ़ी मित्रता हैं। दोनों एक दूसरे के परिवार से भी परिचित हैं। दोनों मित्र अपनी-अपनी गृहस्थी अच्छी चलाने के लिए धोबी का काम करते हैं। रघुवीर सीधा-साधा है। वह व्यवहार ठीक तरह से करता है। वह कई सालों से अपने घर नहीं जाता। उसे दो बेटियाँ और एक बेटा है। वह अपने बेटियों के विवाह कर देना चाहता है।

अवधेश और रघुवीर , के साथ अन्य मजदूर है। सभी मजदूरों के कॉन्ट्रेक्ट में हेल्थ और मेडिकल के सारे खर्चे की जिम्मेदारी स्पान्सर ने ले ली है। स्पान्सर मजदूरों के साहब है

, लेकिन यह स्पान्सर मजदूरों को मेडिकल के लिए पैसे नहीं देते। सभी कर्मचारियों को वेतन भी ठीक तरह से नहीं देते। स्पान्सर नए आठ मजदूरों को काम पर रखतें हैं। मजदूरों को ठगाया जाता है। स्पान्सर ने अग्रीमेंट में मजदूरों का आवास की सुविधा लिखने के बावजूद भी उसने यह सुविधा मजदूरों को नही दी हैं। अन्य दुकानों में काम करनेवाले मजदूर भी दुकान की जगह पर ही रात को उन्हें रहना पडता है। मजदूरों के पास पर्याप्त पैसे न होने के कारण वह किरायेपर कमरा लेकर नही रह सकते। मजदूर दूकान में ही खाना खाते हैं, और वहाँ पर सो जाते हैं।

एक दिन रघुवीर की तबीयत बिगड़ जाती है। अवधेश उसे अस्पताल लेकर जाता है। अस्पताल में रघुवीर की मृत्यु हो जाती है। रघुवीर की मृत्यु के मामले में पुलिस अवधेश को गिरफ्तार कर लेती है। स्पान्सर रघुवीर की लाश भारत नही भेजते।

इस प्रकार विदेशों में भारतीय मजदूरों के होनेवाले शोषण पर लेखक ने प्रकाश डाला है।

२८) 'शहर' – चित्रा मुद्गल

'शहर' चित्रा मुद्गल, द्वारा लिखित कहानी 'नया ज्ञानोदय' के नवंबर, २००३ के अंक में प्रकाशित हुई है। लेखिका ने प्रस्तुत कहानी के माध्यम से भगवान के नाम पर होनेवाले शोषण को दर्शाया है।

गाँव के पास पहाड़ पर दुर्गा माता का मंदिर है। गाँव के लोग इस मंदिर में जाते हैं । यह मंदिर प्राचीन है। मंदिर के कारण अनेक भिखारियों को वहाँ पैसे मिलते हैं। मंदिर में कई गाँवो के लोग और किसान भी आ जातें है। लोग भिखारियों को दान - दक्षिणा देते हैं। भिखारी मंदिर के इर्द-गिर्द दिखाई देते हैं।

अमीर लोग भगवान के नाम पर भिखारियों को भोजन देते हैं। इससे भिखारियों को हर दिन, पैसे मिलते हैं भोजन भी मिलता है। जिससे भिखारियों की संख्या बढ़ गई हैं।

भिखारी सोचते है कि, शहर जाने से बहुत पैसा मिलेगा। लेकिन , गाँव वे मंदिर के कारण उनको काफी पैसा मिलता है। इसीलिए वह शहर नहीं जा बसते।

प्रस्तुत कहानी में लेखिका ने भिखारियों की समस्या को चित्रित किया है।

२९) 'सहसा एक बूँद उछली' - उर्मिला शिरीष

'सहसा एक बूँद उछली' उर्मिला शिरीष द्वारा लिखित कहानी ' नया ज्ञानोदय' के नवंबर , २००३ के अंक में प्रकाशित हुई है। लेखिका ने प्रस्तुत कहानी के माध्यम से एक विकलांग बच्ची का चित्रण किया है और विधवा नारी की मानसिकता को दर्शाया है।

प्रस्तुत कहानी की नायिका 'डॉ. काचरु' है। 'मिनी' उसकी बेटी है। डॉ. काचरु मेडिकल कॉलेज में टीचर है। डॉ. काचरु के पति की मौत होनेपर वह अकेली हो गई है। नायिका बेटा और बेटी की जिम्मेदरी अकेली उठाती है। नायिका बहुत सुंदर है। काचरु के अकेलेपन को देखकर लोग उसे विवाह करने की सलाह देते हैं। वह चाहती है, अपने बच्चे पढ़ाई में तेज हो । उसके बेटे ने प्रेम-विवाह किया है।

डॉ. काचरु सारा दिन काम में ही लगी रहती है। बच्चे यह नहीं समझते कि, वृद्धावस्था में माँ को आराम मिलना चाहिए। उसकी बेटी ने बी.एससी. पास किया है। उसका विवाह इंजीनियर लड़के से हो गया है। बेटी ने एक विकलांग बच्ची को जन्म दिया है। डॉ. काचरु विकलांग पोती को देखकर परेशान हो जाती है। वह बेटी की स्थिति भी बर्दाश्त नहीं करती। पोती बहुत ही सुंदर हो गई है। बेटी की सास और पति अपने विकलांग बेटी का स्वीकार नहीं करते। डॉ. काचरु का जमाई कमजोर व्यक्तित्त्व का है।

नायिका के बेटी का जीवन परित्यक्ता का हो गया है। पोती विकलांग है। दोनों का भविष्य अंध:कारमय हो गया है। ऐसी विचित्र परिस्थिति में डॉ. काचरु चिंतित हैं। डॉ. काचरु अपनी बेटी के जीवन से निराश हो गई है। वह बेटी की अगली पढ़ाई के लिए प्रोत्साहित करती

है। बेटा उसकी कोई सहायता नहीं करता। बेटी मानसिक रोगी बन गई हैं। डॉ. काचरु का बेटा पोती को अपाहिज बच्चों के अस्पताल में भेज देने को कहता है। इस बात से वह अपना होकर भी बेगाने जैसा व्यवहार करते देखकर डॉ. काचरु क्रोधित होती है।

डॉ. काचरु विकलांग पोती के बारे में अपने प्रिय शिष्य तथा सहयोगी को बुलाकर सलाह चाहती है। वह नायिका को उचित सलाह देता है। बेटी इन सभी से तंग आकर आत्महत्या का विचार करती है। डॉ. काचरु अपनी बेटी को सहानुभूति दिखाती है। डॉ. काचरु पोती के लिए खिलौंने लाती है। डॉ. काचरु की बेटी के मन में आत्मविश्वास आ गया है। वह अगली पढ़ाई पूरी करती है। उसने एल्.एल्.बी. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की है।

डॉ. काचरु पोती को घूमाने ले जाती हैं। उसे नई-नई वस्तुएँ दिखाती है। पोती खुश होती है। पोती अब बडी हो गई है। वह बहुत ही सुंदर है। डॉ. काचरु पोती बडी होने से परेशान होती है। जब उसकी बेटी का सिलेक्शन जज के लिए नहीं होता, तब वह अपनी बेटी का हौसला बढ़ा देती है। डॉ. काचरु अपनी बेटी को पढ़ाने के लिए अपने प्रिय शिष्य को घरपर बुलाती है। वह शिष्य उनके घर आकर बेटी को पढ़ाता है। बेटी को 'बाल सुधार न्यायालय ' में न्यायाधीश का पद मिलता है। बेटी का जीवन के प्रति दृष्टिकोण बदलता है। बेटी खुश रहती है। बेटी नौकरी में अधिक समय ध्यान देने लगती है। डॉ. काचरु सेवा-निवृत्त हो जाती है। वह अपनी बेटी का पुनर्विवाह कर देना चाहती है। डॉ. काचरु भविष्य को देखते हुए, वर्तमान के साथ चलती है। वह अपनी बेटी का विवाह प्राध्यापक के साथ करती है। फिर वह विकलांग पोती की जिम्मेदारी अकेली उठाती है।

डॉ. काचरु के घर उसके दूर का एक रिश्तेदार आता है । वह डॉ. काचरु की विकलांग पोती से अनैतिक संबंध रखता है। जिससे वह गर्भवती बन जाती है। इस बात का पता जब डॉ. काचरु को चलता है, तब वह हैरान रह जाती है। लेकिन ये दोनों विवाह करना चाहते हैं।

पोती बच्चे को जन्म देती है। कुछ दिन के बाद उसका प्रेमी उसे धोखा देकर भाग जाता है। जिससे डॉ. काचरु चिंतित हो जाती है।

प्रस्तुत कहानी में लेखिका ने पारिवारिक समस्या को चित्रित किया है। प्रस्तुत कहानी में विकलांग नारी की यातना का वर्णन किया है। परित्यक्ता और विधवा नारी के जीवन के दर्द पर प्रस्तुत कहानी में प्रकाश डाला है।

३०) 'एक चिड़िया का शोकगीत' – सेराज खान 'बातिश'

'एक चिड़िया का शोकगीत' सेराज खान ' बातिश' द्वारा लिखित कहानी 'नया ज्ञानोदय ' के नवंबर, २००३ के अंक में प्रकाशित हुई है। लेखक ने प्रस्तुत कहानी के माध्यम से खूबसूरत परिदों को चित्रित किया हैं।

नायक परिंदो से प्यार करता हैं। परिंदे बेचनेवाला उनसे सौदा करता है। वह पचास रुपये में तीन जोडे परिंदे देने को तैयार होता हैं। एक जोड़ा पहाड़ी गौरेया का देता है। उन चिड़ियों को बाँस की टोकरी में रखा जाता है। पहाडी गौरेया का जोड़ा आकर्षक है। बाहर की चिड़ियाँ उस जोड़े को बड़े ही कौतूहल से देखती है। इस जोड़ों को देखकर नायक को अपने बचपन की याद आ जाती है।

नायक बेटे भी इन जोड़े को देखकर आनंदित, उत्साहित हो जाते हैं। पिंजरा खोलने से एक गौरया बाहर उड जाती है। फिर वह वापस नहीं आती। इन से नायक चिंतित हो जाता है। परिंद फरोशी का काम नायक के बाप-दादाओं से चलता आया है। कुछ लोग पिंजरा खरीदते हैं । फिर वह पिंजरे की सभी चिड़ियों को आजाद करते हैं। कुछ लोगों का यह शौक होता है।

मनुष्य परिंदों की आजादी को जानते हुए भी वह उसे पिंजरे से मुक्त नहीं कर सकता। नायक चिड़ियों का भोजन उनका रहन-सहन इन सारी बातों की जानकारी लेता है। पिंजरे की चिड़ियों को बाहरी पहाड़ी गौरेया पुकारती हैं। तब पिंजरे के परिंदे प्रभावित होते हैं। अन्य

बाहरी पंछियों को देखकर पिंजरे में परिंदा उछलता है। पिंजरा छोड़ने की कोशिश करता है। लेकिन नायक यह सब देखता है। वह उसे आजाद नहीं करता। क्योंकि, उसे आजाद करने से उसे चील, कौवे नोच न ले इसका नायक को डर है।

एक दिन परिंदे की अपनी आजादी की कोशिश में मौत होती है। यह देखकर नायक को दयनीयता महसूस होती है। इस घटना से परिंदों का आकर्षण ही नष्ट होता हैं। इस घटना से नायक को आजादी के लिए लड़नेवाले नेताओं की याद आ जाती हैं। वह वास्तविक जीवन पर विश्वास रखते हुए, पिंजरे के अन्य परिंदों को आजाद करता हैं। इससे उसको समाधान प्राप्त होता है।

प्रस्तुत कहानी में चिड़िया की दयनीयता को दर्शाया है। उनके साथ किये जानेवाली अमानवीय व्यवहार को चित्रित किया गया है। लेखक ने पंछी की आजादी की कथा को सुंदर ढ़ंग में अभिव्यक्त किया है।

३१) 'भुरमुंड़ा' - जयशंकर,

'भुरमुंड़ा' जयशंकर द्वारा लिखित कहानी 'नया ज्ञानोदय' के दिसंबर, २००३ के अंक में प्रकाशित हुई है। प्रस्तुत कहानी आदिवासी जन जीवन से संबंधित है। प्रस्तुत कहानी में लेखक ने आदिवासी जन-जीवन की संस्कृति, रीतिरिवाज , त्यौहार, संस्कार आदि का यथार्थ चित्रण प्राप्त किया है। कहानी प्रथम पुरुष एक वचन में लिखी गई हैं।

भुरमुंड़ा गाँव में एक शिव का मंदिर है। वहाँपर किसी पीर की मजार भी है। जिसके भक्तगणों में हिंदू-मुस्लिम धर्मों के लोग हैं। जिसके माध्यम से लेखक ने हिंदू-मुस्लिम एकता के पक्ष पर प्रकाश डाला है।

प्रस्तुत कहानी में साँवली नाम की एक लड़की है। वह परिश्रमी है। दूसरों के घर काम करती है। प्रस्तुत कहानी में भुरमुंड़ा के प्रकृति का सुंदर चित्रण लेखक ने प्रस्तुत किया है।

लेखक ने लिखा है, '' मुझे पता था कि, उसके मकान की दीवारों का रंग आसमानी नीला है। उसके आँगन में सेमल का पेड़ है। वहाँ पडोस में एक मिट्टी का मकान है और उसके आँगन में घोड़े बँधे रहते हैं। मैं अपने शहर की खिडकी से उसके गाँव की पहाड़ियों को उसी तरह महसूस कर सकती हूँ जैसे वह महसूस करता होगा।''१० इसी प्रकार लेखक ने भुरमुंड़ा का प्राकृतिक चित्रण प्रस्तुत किया है।

प्रस्तुत कहानी में आदिवासी जन-जीवन में व्याप्त धार्मिक विश्वासों का सुंदर चित्रण किया है। नायिका अपने जीवन की व्यथा बता रही है। उसके पिताजी को दिल का दौरा पडा था। उनकी शुश्रूषा करने के लिए वह अस्पताल में रहती है। नायिका साँवली का हमेशा खयाल रखती है।पूर्वदीप्ति शैली कहानी में अपने बचपन की कुछ यादों को तरोताजा करने का काम नायिका के माध्यम से लेखक ने प्रस्तुत किया है। नायिका अपने प्रेमी को दिलो-जान से चाहती है। लेकिन किसी कारणवश वह अपने प्रेमी के साथ विवाह नहीं कर सकती। नायिका कभी - कभी अपने प्रेमी की यादों में खो जाती है। तो कभी भुरमुंड़ा के प्राकृतिक दृश्यों को अपने जीवन का आधार बनाती हैं। इसी प्रकार प्रस्तुत कहानी में एक असफल प्रेमकथा के साथ-साथ भुरमुंड़ा के आदिवासी जन-जीवन का चित्रण आया है।

प्रस्तुत कहानी में अविवाहित रहने की समस्या, आदिवासी जन-जीवन में व्याप्त धार्मिक विश्वास वहाँ का सांस्कृतिक परिवेश आदि पक्षों का सुंदर चित्रण हुआ है।

३२) 'ग्रहण' - रमा सिंह

'ग्रहण', रमा सिंह द्वारा लिखित कहानी 'नया ज्ञानोदय' के दिसंबर , २००३ के अंक में प्रकाशित हुई है। लेखिका ने प्रस्तुत कहानी के माध्यम से विधवा नारी की दर्दमयता तथा उसकी असहायता को दर्शाया है।

कहानी की नायिका बाल-विधवा वसुंधरा है । उसके पिता वृद्ध है । सौरभ वसुंधरा सुमन घर सौंप देता है। सुमन का बेटा राहुल अविकसित दिमाग का है। सुमन नौकरी करती है। अतएव उसके बेटे की शुश्रुषा करने के लिए वसुंधरा जैसे स्त्री की उसे आवश्यकता थी। वसुंधरा सुमन के घर नौकरानी बनकर रहती है। वह दिनभर सुमन के बेटे राहुल के साथ रहती है। सुमन मानती है कि उसने अपने बेटे को 'ग्रहण' के समय जन्म दिया था। इसलिए वह अविकसित दिमाग का पैदा हुआ है। सुमन अपने बेटे के भविष्य को लेकर हमेशा चिंतित रहती है। वसुंधरा सुमन के अविकसित बेटे राहुल को भगवान का रुप मानती है।

वसुंधरा गर्भवती बन जाती है। सुमन उसे पूछती है कि तुम्हारे पेट में पल रहा पाप किसका है। तब वह बताती है कि वसुंधरा के अविकसित बेटे राहुल के साथ उसके अवैध संबंध थे। सुमन वसुंधरा को गर्भपात करने की सलाह देती है। वसुंधरा उसके प्रस्ताव को स्वीकार नही करती। वसुंधरा एक रात्रि सुमन को पूर्वसूचना न देते हुए उसका घर छोड़ देती है।

कुछ महीने बाद सुमन को वसुंधरा की चिट्ठी आती है। सुमन को आश्रम में बुलाया जाता है। वसुंधरा ने बालक को जन्म दिया है। वह अपने बालक के साथ आश्रम में रहती है। वसुंधरा का कहना है कि, यह बालक बडा होकर राहुल की परवरिश कर सकता है। वसुंधरा विधवा आश्रम में रहने के बारे में सोचती है। वह बालक राहुल जैसा दिखाई देता है। वसुंधरा की इन सभी बातों से सुमन को सहानुभूति मिलती है। वह विधवा आश्रम से वसुंधरा को घर लाने के लिए सोचती है।

प्रस्तुत कहानी में लेखिका ने अविकसित बालक की स्थिति का बडा ही मार्मिकता से चित्रण किया है। साथ ही साथ अवैध संतान की समस्या को चित्रित किया है।

३३) 'अपदस्थ' - जयनंदन,

'अपदस्थ' जयनंदन द्वारा लिखित कहानी नया ज्ञानोदय के दिसबंर २००३ के अंक प्रकाशित की है लेखक ने प्रस्तुत कहानी के माध्यम से टूटते परिवार का चित्रण किया है। प्रस्तुत कहानी में आमिष और भूमिका पति-पत्नी है। उनका बेटा निपुण है। सुमित भूमिका का मित्र है। आमिष का व्यक्तित्त्व सीधा-साधा है। क्लब, पार्टी, शॉपिंग में जाना उसे अच्छा नहीं लगता। सुमित का स्वभाव आमिष से अलग है। वह क्लब, पार्टी, शॉपिंग में जाता है।

सुमित की तुलना आमिष से करते समय लेखक ने लिखा है, -''सुमित फर्राटे से अंग्रेजी बोलनेवाला माडर्न शख्सियत का दबंग आदमी था। भूमिका इसकी प्रशंसा करती थी कि, मर्द को ऐसा ही होना चाहिए ..... रौबदर आक्रामक, दबंग, डैशिंग और डॉमिनेटिंग।''११ लेखक ने रौबदार नायक का वर्णन किया है।

आमिष यह चाहकर भी सुमित की तरह नहीं बन सकता। सुमित उनके पडोस में ही रहता है। आमिष के ऐसे सीधे स्वभाव से उसकी पत्नी तंग आ गयी है। वह आमिष से किसी ने किसी भी बात को लेकर बार-बार लड़ती रहती है। वह बेटे निपुण को लेकर अपने मित्र सुमित के पास जाकर रहने का निर्णय लेती है। अपने पति को वह समझ नहीं पाती। भूमिका की बातों पर आमिष कुछ नहीं कह सकता।

आमिष बेटे निपुण की दूरियाँ सह नहीं पाता आमिष हर साल अपने बेटे का जन्मदिन मनाता है। लेकिन इस जन्मदिन के अवसर पर उसका अपना बेटा उसके घर में नहीं है। इस बात पर आमिष निराश हो जाता है। वह अपने बेटे का जन्मदिन के सुअवसर पर गिफ्ट लेकर सुमित के घर जाता है। घर आ जाने पर सुमित उसका स्वागत करता है। निपुण अपने कमरे में है। वह अपने पापा की यादों में निराश हो गया है। पिता की आवाज सुनकर वह खुश हो जाता है। निपुण बीमार है। यह देखकर आमिष तुरंत होमियोपैथी डॉक्टर के इलाज की बात करता

है। वह बेटे को लेकर अस्पताल जाता है। बेटे के मन में आमिष और सुमित को लेकर कई सवाल निर्माण हो जाते हैं। भूमिका अपने बेटे से सुमित को 'पापा' कहने के लिए कहती है।

बेटा आमिष और सुमित को लेकर उलझन में पड गया है। आमिष को एक दिन किचेन के डिब्बों में कुछ ढूँढ़ते समय हीरे का हार मिल जाता है। पत्नी को वह हीरे का हार सुमित ने दिया था। आमिष से छुपाने के लिए उसने किचेन के डिब्बों में रख दिया था। लेकिन , आमिष हीरे का हार लेकर पत्नी को देता है। आमिष ईमानदार है। पत्नी के ऐसे स्वभाव से वह उसे कुछ नहीं कहता। भूमिका अपने बेटे को लेकर आमिष के घर पर रहती है। उसका बेटा वहां पर नहीं रमता। वह हमेशा अपने पप्पा अर्थात् सुमित की यादों में खो जाता है। भूमिका सुमित की यादों में खो जाता है। भूमिका अपने पति को छोडकर किसी अन्य पुरुष के साथ रहती है।

एक बार भूमिका की मां भूमिका के पति को साथ लेकर अपने घर जाने के लिए कहती है। भूमिका अपने पति से में अलग रहती है इस बात का पता अपने मां-बाप को नहीं लगना चाहिए ऐसा कहती है। तब वह अपनी सास-ससुर को भूमिका के बारे में बिलकुल कुछ भी नहीं कहता।

भूमिका के पिता आमिष को कार लेने के लिए धनादेश देते हैं। उसकी माँ आमिष के स्वभाव से आकर्षित हैं उसकी माँ अपना अग्नि संस्कार आमिष को ही करने के लिए कहती है। पत्नी आमिष के साथ पिता के सामने लडना चाहती है।

आमिष अत्याचार करता है। उसका स्वभाव ठीक नहीं है। ऐसा भूमिका अपने पिता से कहती है। यह झूठी बातें आमिष सह नहीं पाता। लेकिन, आमिष भूमिका पिताजी के सामने इन बातों का विरोध भी नहीं कर सकता। आमिष सुबह होने पर वहाँ से स्टेशन निकल जाता है। भूमिका के पिता को आमिष के सीधे-साधे स्वभाव का पता है। इसीलिए भूमिका के पिता स्टेशन पहुँचते हैं। आमिष के ईमानदार स्वभाव पर वे खुश है। आमिष पर भूमिका पिता गर्व करते हैं। निपुण को डर है, मम्मी और पापा को घर जाकर फिर से अलग होना पडेगा। फिर

अपने ही पापा को 'अंकल' कहना पडेगा। इन बातों से भूमिका के पिता आमिष से कहते है, अपने बेटे के लिए भूमिका के साथ घर बसाने का पुनर्विचार करना चाहिए। निपुण पपा से दूर नहीं रहना चाहता।

आमिष भूमिका और बेटे के लिए दो जीवन बीमा पॉलिसी के पेपर सुमित को देता है। पिता ने कार लेने के लिए दिया हुआ धनादेश सुमित के नाम कराता है। आमिष की इन सभी बातों से सुमित और भूमिका को अचरज हो जाता है। आमिष की तबीयत और मानसिक स्थिति ठीक नहीं होगी। वह अंत में अपने बेटे से मिलता है। उसे बताता है कि, वह अब उससे कभी नहीं मिलेगा। उसे पापा की दूरी सहनी पडेगी। निपुण आमिष की यादों में खो जाता हैं। बेटा निराश हो जाता है। आमिष भी दु:खी हो जाता है। आमिष सभी को छोडकर चला जाता है।

प्रस्तुत कहानी में पुरुष की मानसिक स्थिति का वर्णन किया है। पत्नी से संत्रस्त पति की दर्दमय कहानी है, यह ऐसी कहानी है, जिसमें लेखक ने पुरुष के शोषण की व्यथा चित्रित की है।

३४) 'ड़ेक पर अँधेरा' – हीरालाल नागर

'ड़ेक पर अँधेरा ' हीरालाल नागर द्वारा लिखित कहानी 'नया ज्ञानोदय ' के दिसंबर, २००३ के अंक में प्रकाशित हुई है।

प्रस्तुत कहानी सैनिक जीवन पर आधारित है। 'हीरालाल नागर' पत्रकार एवं हिंदी के सशक्त कहानीकार रहे है। वे भारतीय शांति सेना के साथ श्रीलंका में रहे चुके है। उन्होंने ऐसी ही एक सैनिक जीवन की घटना को 'डेक पर अँधेरा' के माध्यम से चित्रित किया है। प्रस्तुत कहानी का नायक संजय चौगालिया है। उसके साथ हवलदार एम.एल. भाखरा और सिपाही गरुड पांडे भी उसके साथ है।

जून की गर्मी में चेन्नई बंदरगाह से भारतीय शांति सेना का एक दल जाफना जा रहा है। हवलदार की सूचना मिलने पर सब सैनिक अपने अभियान पर चलने को तैयार होते हैं। इनकी यह पहली समुद्री यात्रा है, वे हवाई जहाज से जाना चाहते है। लेकिन सेना का आदेश था कि, वे पानी के जहाज से चले जाए। सैनिकों का दल अपना-अपना सारा साहित्य लेकर इस अभियान पर जा रहा है।

चेन्नई का साहिल छोडने पर पानी के जहाज के डेक पर आकर नायक समुद्रीय सौंदर्य का निरीक्षण करता है। समुद्री चिड़ियों की कलाबाजी का समस्त सैनिक आनंद लेते हैं। सैनिकों का सिगरेट पीना, शराब पीना आदि बातों का जिक्र प्रस्तुत कहानी में आया है। नायक अपना सूक्ष्म निरीक्षण प्रस्तुत करता है। उडविल में ऑपरेशन का चित्रण प्रस्तुत कहानी में आया है।

वावूनियाँ के 'वनी' जंगल में तमिल टायगर्स छिपे थे। उनकी तलाशी अभियान में नायक सहभागी है। वे श्रीलंका सैनिकों के शिबिर में चल जाते हैं। वहाँ पर उनका स्वागत होता है। वनी जंगल का वर्णन करते हुए लेखक ने लिखा है, - 'वनि ' का जंगल बहुत भयानक था। घुसते ही हमें लगा, जैसे हम किसी विशाल जंगल के किले में घुस रहे हों , जिसका कोई तयशुदा रास्ता न हो। पेड आकाश को छू रहे थे। उनकी ऊँचाई के सामने हम सब बौने थे। सब डर -डरकर चल रहे थे कि आगे कहीं दुश्मन न बैठा हो। पर हमारी यह आशंका निर्मूल थी। जंगल पहले से छान लिया गया था, फिर फौज को अंदर जाने का आदेश मिला था। सूरज डूब रहा था।[12]'' इसी तरह लेखक ने वहाँ का चित्रण किया है।

नायक को अपने परिवार की याद सताती है। वह उनकी यादों में खो जाता हैं। तमिल टायगर्स और शांतिसेना के दौरान युद्ध होता है। शांति-सेना के सैनिक श्रीलंका के प्रभावित इलाकों में शांति बनाये रखने की कोशिश करते हैं।

प्रस्तुत कहानी में युद्ध की समस्या का वर्णन है।

निष्कर्ष :-

वर्ष, २००३ 'नया ज्ञानोदय' में प्रकाशित कहानियों के वर्ण्य-विषय की दृष्टि से वैविध्य नजर आता है। विवेच्य कहानीकारों ने एक ओर आदिवासी ग्राम, नगर, महानगर देश-विदेश संबंधी विविध आयामों पर अपनी कलम चलाई है। तो दूसरी ओर सड़क, पंछी प्रेम,अंधविश्वास जैसे विषयों को लेकर भी कहानियाँ लिखी हैं। वर्ष, २००३ के 'नया ज्ञानोदय' में कुल मिलाकर ३४ कहानियाँ प्रकाशित हो गई हैं। जिसमें पुरुष कहानीकार २५ हैं तो महिला कहानीकारों की संख्या ०९ रही हैं।

ज्ञान प्रकाश विवेक द्वारा लिखित 'रिफ्यूजी कैम्प' कहानी में कहानीकार ने शरणार्थियों के चहुतरफा होनेवाले शोषण पर प्रकाश डाला है।

राकेश कुमार सिंह द्वारा लिखित 'अरण्यरात्रि की महक' कहानी में लेखक ने भौतिक सुविधाओं से वंचित आदिवासी समाज का चित्रण किया हैं। आदिवासी समाज में व्याप्त मान्यता , रीति-रिवाज का चित्रण प्रस्तुत कहानी में आया है।

चंद्रिका ठाकुर 'देशदीप' द्वारा लिखित 'पापिन पाँखी ' कहानी में आज के वैज्ञानिक युग में व्याप्त अंधविश्वास को दर्शाया है।

राजी सेठ द्वारा लिखित 'दलदल' कहानी दाम्पत्य जीवन में आनेवाले बिखराव को स्पष्ट करती है। कहानी का शीर्षक यथोचित है।

शिवकुमार यादव द्वारा लिखित 'कई-कई शक्लोंवाले प्रेत' कहानी में लेखक ने सांप्रदायिक दंगों का चित्रण किया है। सांप्रदायिक दंगों से प्रभावित समाज की दयनीय स्थिति पर लेखक ने प्रकाश डाला है। लेखक सांप्रदायिक दंगों को ही कई-कई शक्लोंवाले प्रेत कहते हैं।

ए. असफल द्वारा लिखित 'प्रत्याशा' कहानी में तीन मित्रों का पंछी प्रेम दिखाया गया हैं।

दिनेश पाठक द्वारा लिखित 'पारुल दी' कहानी की नायिका पारुल परित्यक्ता है। पति द्वारा त्याग देने पर वह आत्मनिर्भर बन जाती है। विपरित परिस्थितियों से जूझकर वह कहानी के अन्त में पाठकों के गले का हार बन जाती है।

सुनीता जैन द्वारा लिखित 'पाँच दिन' कहानी में विदेश में स्थित अपने बेटे के पास उसकी माँ चली जाती है। लेकिन बेटा अपनी पत्नी की बातों में आकर अपनी जन्मदात्री माँ को भूल जाता है। इस पक्ष का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत कहानी के माध्यम से पाठकों को पढ़ने मिलता है।

आनंद बहादूर द्वारा लिखित 'ढ़ेला' कहानी में रास्ते में पडे हुए ढ़ेले का चित्रण लेखक के कलात्मकता के साथ प्रस्तुत कहानी में चित्रित किया है।

राजेंद्र लहरिया द्वारा लिखित 'द्वंद्व समास : उर्फ कथा तिलिस्म की' कहानी में लेखक ने समाज में व्याप्त अंधविश्वास पर प्रकाश डाला है। प्रस्तुत कहानी के माध्यम से लेखक ने अंधविश्वास सामाजिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है ऐसा माना है।

पुन्नी सिंह द्वारा लिखित 'अन्तर्कथा' में जेल में बंदिस्तों की व्यथा को चित्रित किया है। साथ ही साथ जेल में व्याप्त काले कारनामों पर प्रकाश डाला है।

मुशर्रफ आलम जौकी द्वारा लिखित 'मुझे उसे जिंदा रखना है' कहानी में नायक की मानसिकता का चित्रण प्रस्तुत किया हैं।

अशोक प्रियदर्शी द्वारा लिखित 'औरत ' कहानी में विधवा जीवन की व्यथा चित्रित है। महानगरीय परिवेश में जीवन यापन करनेवाली अकेली डॉ. काचरु अपने

बेटियों के करिअर के लिए छटपटाती हैं। इस पक्ष का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत कहानी में है।

मालती जोशी द्वारा लिखित 'तुम मेरी राखो लाज हरी' कहानी में विधवा नारी के उपेक्षित जीवन का दर्द एवं उसके ससुर द्वारा होनेवाला उसका यौन शोषण चित्रित है।

नरेंद्र नागदेव द्वारा लिखित 'कुछ कहना है' कहानी में बीमार माँ को मिलने के छटपटानेवाले बेटे की दास्तान है। माँ बेटे के प्रेम का चित्रण प्रस्तुत कहानी में है।

विजय द्वारा लिखित 'जंगल का सपना ' कहानी आदिवासी जन जीवन पर आधारित है। प्रस्तुत कहानी में अंजी-अन्होर की प्रेमकथा है। पितृ प्रेम से वह वंचित बेटी अपने जन्मदाता पिता से लिने के लिए उतावली हो जाती है। इस पक्ष का सुंदर चित्रण प्रस्तुत कहानीमें है।

गोविंद मिश्र द्वारा लिखित 'तुम हो' कहानी में सुषमा की दर्दभरी कहानी चित्रित है। वह परित्यक्ता है। सुषमा शारीरिक एवं मानसिक यातनाओं से त्रस्त होने के कारण वह जीने की उम्मीद खो चूकी है। लेकिन वह अन्त में आत्मनिर्भर बनकर जीवन में सफल हो जाती है।

अवधेश प्रीत द्वारा लिखित 'सरपट' कहानी में दो मित्रों की व्यापारी मनोवृत्तियों को दर्शाया है।

नफीस आफरीदी द्वारा लिखित 'घर पहाड़ होता है ' कहानी में ऋण के बोझ से लदा घर आर्थिक विपन्नता का सामना करते अंदर ही अंदर टूट जाता है। इस पक्ष का चित्रण प्रस्तुत कहानी में है।

संतोष दीक्षित द्वारा लिखित 'उसकी वह अंतिम रेल यात्रा' कहानी में एक वृद्धा के जीवन की दुखभरी कहानी को लेखक ने करुण स्वर में प्रस्तुत किया है। वृद्धा अपने जीवन के अंतिम दिनों में रेल की यात्रा कर रही हैं। उस पक्ष का चित्रण प्रस्तुत कहानी में है।

मृदुला गर्ग द्वारा लिखित 'वह दूसरी ' कहानी में लेखिका ने आत्मकथात्मक शैली का प्रयोग किया है। प्रस्तुत कहानी में उपेक्षित स्त्री जीवन की व्यथा को साकार रुप दिया है।

अजित हर्षे द्वारा लिखित 'प्रेम, सपना और मृत्यु' कहानी में लेखक ने प्रेम, सपना और मृत्यु का संबंध मनोवैज्ञानिक ढ़ंग से प्रस्तुत किया है। नायिका सपने में जो भी दृश्य देखती है वह सच होता है। इस पहलू पर प्रस्तुत कहानी में प्रकाश डाला गया है।

उषाराजे सक्सेना द्वारा लिखित 'मेरे अपने' कहानी में कहानीकार ने एक प्रेमकथा को स्पष्ट किया है। साथ ही साथ पितृ प्रेम से वंचित बेटी का दु:ख,दर्द प्रस्तुत कहानी में चित्रित है।

राजेश जैन द्वारा लिखित 'मन मोबाईल' कहानी में सड़कों की दुर्दशा का चित्रण प्रस्तुत कथा सूत्र में पिरो देने का काम कहानीकार ने किया है।

चंद्रकांता द्वारा लिखित 'रात में सागर' कहानी में बेटोंवाली अपहिज नारी की मानसिक गुत्थियों पर प्रकाश डाला है।

तरुण भटनागर द्वारा लिखित कहानी 'धूल की एक परत ' में अकेलापन एवं विधवा जीवन का दर्द चित्रित है।

कृष्ण बिहारी द्वारा लिखित 'धोबी का कुत्ता' कहानी में विदेश में भारतीय मजदूरों का होनेवाला शोषण चित्रित है। अग्रीमेंट के तहत उन्हें किसी भी प्रकार

बुनियादी सुविधा नहीं दी जाती। यहाँ तक की रघुवीर मरने के बाद भी उसे दफनाने के लिए जगह भी नहीं दी जाती। इस प्रकार विदेश में भारतीय मजदूरों के शोषण पर लेखक ने प्रकाश डाला हैं। चित्रा मुद्गल द्वारा लिखित 'शहर' कहानी में भीखमंगों के दुनिया का चित्रण प्रस्तुत किया है।

उर्मिला शिरीष द्वारा लिखित 'सहसा एक बूँद उछली ' कहानी की नायिका डॉ काचरु उच्च शिक्षित है। वह परित्यक्ता है। वह अकेली होते हुए अपने बेटियों के विवाह-नौकरी के लिए प्रयासशील रहती हैं।

सरोज खान बातिश द्वारा लिखित 'एक चिड़िया का शोकगीत' कहानी में कहानीकार ने पंछी प्रेम को चित्रित किया है।

जयशंकर द्वारा लिखित 'भुरमुंड़ा' कहानी में कहानीकार ने आदिवासी जन-जीवन में व्याप्त संस्कृति, रीति-रिवाज,त्यौहार संस्कार अंधविश्वास आदि पक्षों पर प्रकाश डाला है।

रमा सिंह द्वारा लिखित 'ग्रहण' कहानी में बाल विधवा की करुण कहानी पाठकों के सामने रखी है। साथ ही साथ प्रस्तुत कहानी में अविकसित संतान की व्यथा का दर्द चित्रित किया है।

जयनंदन द्वारा लिखित 'अपदस्थ' कहानी में परित्यक्त की व्यथा को बडे लगाव के साथ चित्रित किया है। प्रस्तुत कहानी यह एक ऐसी कहानी है जो परित्यक्त पुरुष की व्यथा को उजागर कर देती है।

हीरालाल नागर द्वारा लिखित 'डेक पर अंधेरा' कहानी में युद्ध की कथा है। श्रीलंका में शांति सेना का अभियान जब चल रहा था। तब वहां के एक सत्य प्रसंग को लेकर प्रस्तुत कहानी लिखी गई है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

१	प्रभाकर श्रोत्रिय (संपादकीय)	नया ज्ञानोदय	जून,२००३	पृ-२५
२	ज्ञानप्रकाश विवेक,	रिफ्यूजी कैम्प, वही	फरवरी, २००३	पृ-७०
३	वही	वही वही	वही	पृ-७३
४	राकेश कुमार सिंह	अरण्यरात्रि की महक	वही वही	पृ-७७
५	राजी सेठ, दलदल		मार्च-अप्रैल,२००३	पृ-१७
६	शिवकुमार यादव,	कई-कई शकलोंवाले प्रेत	वही वही	पृ-६८
७	दिनेश पाठक	पारुल दी	वही मई,२००३	पृ-१२०
८	अशोक प्रियदर्शी	औरत	वही जून, २००३	पृ-११९
९	नवल जी	नालंदा विशाल शब्दसागर		पृ-१४१४
१०	जयशंकर	भुरमुंडा	नया ज्ञानोदय,दिसंबर,२००३	पृ-२५
११	जयनंदन अपदस्थ	वही वही		पृ-८५
१२	हीरालाल नागर, डेक पर अंधेरा	वही वही		पृ-१०४